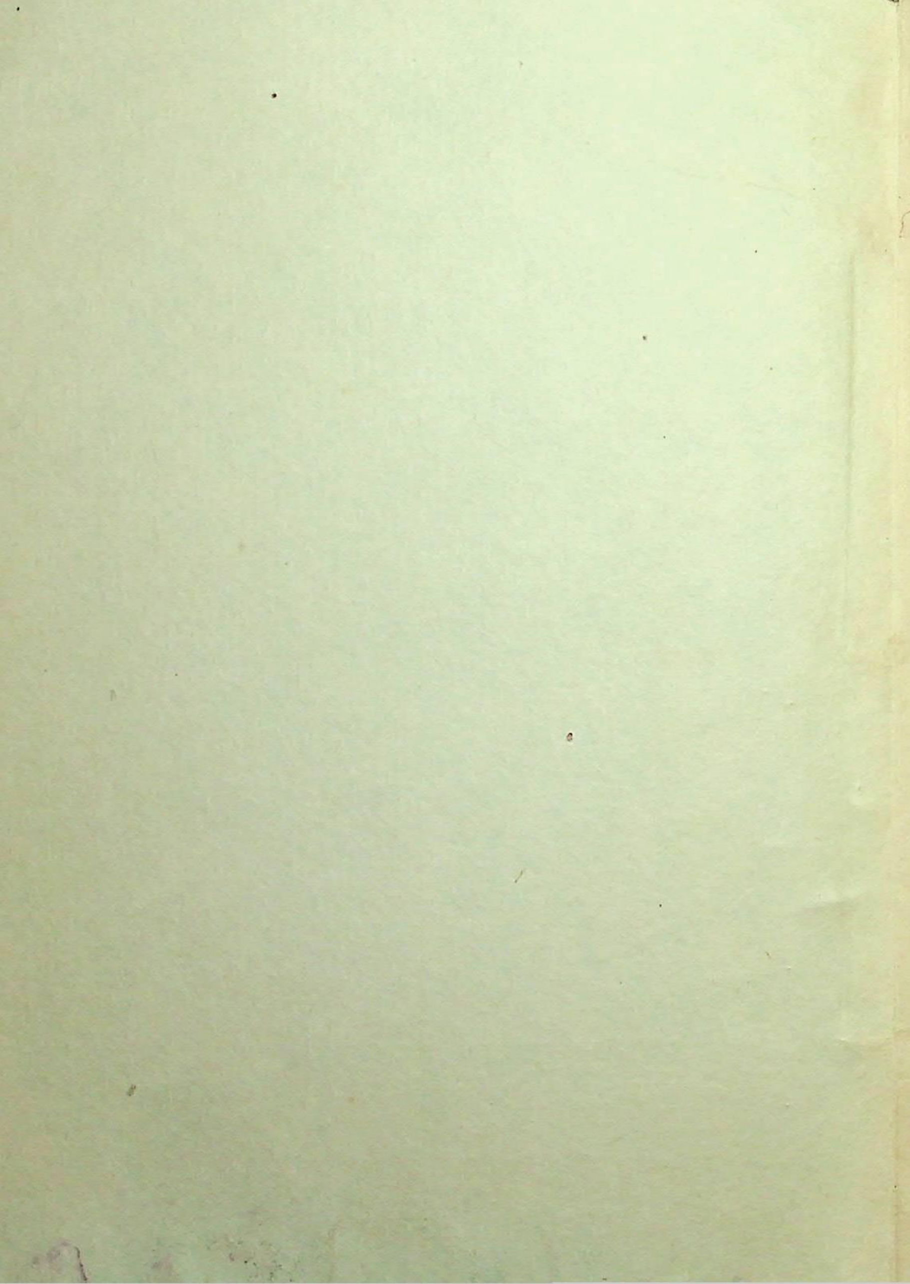
उपन्यास

बिन पानी के दरिया

सारथी



[illegible]

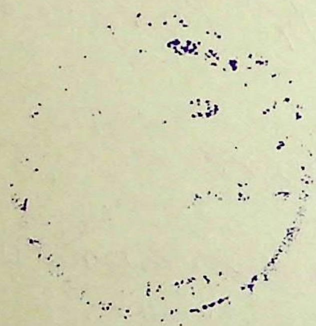
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

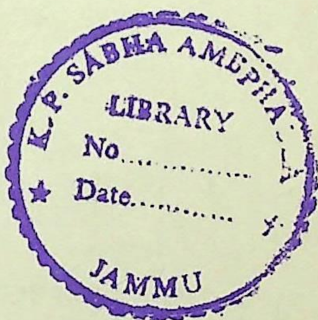
২/৪/৭৬



बिन पानी के दरिया

उपन्यास





सारथी

सारथी प्रकाशन
59–गली बावा लाल जी, जैन बाजार
जम्मू तवी (भारत) 180001

BIN PAANI KE DARIYA
A HINDI NOVEL
BY
O. P. SHARMA SARTHI

प्रथम संस्करण : 1993
संख्या : 500
मूल्य : 25 रुपए
प्रकाशक : सारथी प्रकाशन, जम्मू
मुद्रक : रमेश प्रेस जम्मू
मिलने का पता : अदबी कुंज जम्मू

अदबी कुन्ज के युवा लेखकों को
समर्पित

बिन पानी के दरिया

यह उपन्यास लिखते हुए मुझे लगा है कि मानव जिस सभ्यता का निर्माण पल-प्रति पल किये जा रहा है वही उसकी सब से बड़ी शत्रु है। अपनी ही शत्रुता तथा प्रतिरोध में सुख की तलाश, इसके लिये मरीचिका सी भटकन लगी है और बहुत भीतर वह कर फूटने वाले प्रतिरोध को भी इसी कारण रोके हुए है। जहां पर श्वास - श्वास पर शोध तथा चिन्तन की ही आवश्यकता है वहां पर अपने अपने कन्धों पर हर आदमी घुटन, चुप्पी, खन्डन और विसंगति को ढोए जा रहा है। किसी भी तथ्य अथवा घटना को यथा-तथ्य देखने, साक्षातकार करने का साहस ऐसे जा चुका है कि अब लोटे गा नहीं। लौटता ही नहीं।

मैं सोचता हूं जीवन तो राग है। एक बहुरंगी चित्र है। एक नृत्य है। स्वयं में से फूटता राग। स्वयं ही मैं से उभर कर बनता हुआ चित्र। स्वयं में नाचता हुआ नृत्य। और स्वयं में होता हुआ एक अन्वेषण। शायद गहन सन्वेदना का यही कारण है कि वर्तमान जीवन प्रणाली स्वरचित भयावह जीवन स्थितियों के वेरंग चित्रों की ऊल जलूल कहानी बन गई हो।

पात्र, चरित्र, नायक और कथ्य भूमि की, जिन की तलाश आप को है, मुझे भी उन्हीं की तलाश है। मैं भी आर्थिक, सामाजिक

राजनैतिक विसंगतियों का शिकार मानव की उस आकृति को खोज रहा हूं, जो भ्रष्ट को भ्रष्ट कहे, घिनौने को घिनौना कहे, क्रूर को क्रूर और अनैतिक को अनैतिक कहे। जो अवसर वादिता की रिस रिस कर बहती हुई पीप का अहसास आदमी को करवा सके।

मुझे विश्वास है नंगा रुक्ख, रेशम के कीड़े, पत्थर ते रंग, मकान (डोगरी) तथा रण क्षेत्र ओर विन पैरां तों धरती (पंजाबी उपन्यास) की ही भांति इस उपन्यास "बिन पानी के दरिया" को भी उसी रुचि गहनता और हार्दिकता से पढ़ा जाएया और उसके कथन-कथ्य तथा पृष्ट भूमि तक पहुंचने का प्रयास मित्र वर्ग करेगा। मुझे यह भी आशा है, क्योंकि सर्जना शैली प्रतिकात्मक है और जिससे प्रसंगों में "कारण बताओ" की स्थिति का उत्पन्न हो जाना स्वाभविक है, सदैव की भान्ति इस बार भी यह अपराध क्षमा कर दिया जाएगा। ढेर सारी प्रार्थनाओं सहित आपका ही मित्र।

ओ० पी० शर्मा 'सारथी'
सीनियर टेक्नीकल आफिसर
रीजनल रिसर्च लैबारट्री (सी. एस. आई. आर.)
कैनाल रोड़ जम्मू।

एक जनवरी, 1993

एक

बसती के नए विधान और नई प्रथा के अनुसार बसती की सड़कों पर फिर से हाथी-गाड़ियां, ऊंट-गाड़ियां और बैल-गाड़ियां दिखाई देने लगी थीं। परन्तु एक भीषण अन्तर दृष्टिगोचर हो रहा था। ऊंट गाड़ी को खींचने के लिए ऊंट जोतने की प्रथा नहीं थी। आदमी ही ऊट की खाल और ऊंट का मुखौटा पहना कर जोत लिया जाता था। हाथी के और बैलों के हल्के भारी, अच्छे और साधारण हर प्रकार के मुखौटे उपलब्ध थे। उन गाड़ियों में इसके अतिरिक्त एक और नयापन था। हर गाड़ी पर छप्पर अथवा छत के स्थान पर गरूड़ जैसे आकार की छत होती थी। जिसमें से कुच्छ-कुच्छ समय के बाद स्वर उभरता था—पहुचों और पहुचाओ। कहां के सम्बन्ध में पूछना पुराना और पिछड़ापन हैं।

इन गाड़ियों पर लोग बैठते थे। कहां के सम्बन्ध में कोई नहीं पूछता था।

चौराहे में से गुजरने वाली ऊंट गाड़ी और भी विचित्र दिखाई दे रही थी। वह गाड़ी स्वयं में ऊंट दिखाई दे रही थे। जिसकी छत पर बैठा एक आदमी चिल्ला रहा था। और एक युवती ऊंट की नुकेल पकड़ आगे-आगे चल रही थी। वह आदमी कंस जैसा था और कह रहा था—मैं इस युवती के साथ जाना नहीं चाहता।

यह मुझे अगवा कर रही है । मुझे बचाओ । इसने अपना यौन परिवर्तन करवा लिया है । बचाओ इस युवती से ।

सड़क पर चलते-भागते फैन्सीड्रैसों वाले लोग एक नज़र आधुनिक कैंस को देखते । फिर लोहे के चमत्कारी ऊंट को । फिर अन्त में मुस्करा कर लैला की कागज़ी तलवार और लैला को देखते और चल देते । वह दूर तक यह सब देखता रहता कि कान में स्वर सुनाई पड़ा— यहीं खड़े रहे तो पसलियां टूट जाएंगी । हिलो-जुलो और किसी एक ओर चल दो ।

कहने वाले की ओर उसने देखा तो देखता ही रह गया । सिर पर केशों के स्थान पर छोटी-छोटी महीन बरछियां । दोनों आंखों में पुतलियों के स्थान पर तेज़ी से दाएं-बाए भागती हुई मछलियां । होंटों पर गुलाबी रंग की लिपाई । अकड़ी हुई पतली सी गर्दन और औरत नुमा छातियां । घुटने टखने पांव सब नंगे । पहचान नहीं पाया तो मुंह से निकला — मैं ने तुम्हें पहचाना नहीं ।

—मैंने भी तुम्हें नहीं पहचाना । तुम शायद नहीं जानते कि बस्ती के नए विधान के अन्तर्गत यह नियम लागू हो गया है कि आपस में पहचान रखने वाले लोग एक दूसरे के निकट अब अजनबी हो जाएंगे । अब मैं तुम्हारे लिए नितान्त अजनबी हूं ।

—पहले तुम मुझे जानते थे ? उसने प्रश्न किया ।

— इसका उत्तर देने के लिए मुझे अनुमति लेनी पड़ेगी । मछली की आंख वाले ने कहा ।

—किसकी अनुमति लेनी पड़ेगी ? फिर से उसने पूछा ।

— किसी भी एसे दुकानदार की अनुमति, जिसके पास प्रमाण-पत्र होगा । उत्तर मिला ।

— तो अनुमति लेलो। यहां असंख्य दुकानें हैं। उसने कहा।

वह व्यक्ति उसे साथ लेकर एक दुकान में घुसा। उसे तुरन्त अपने हाथों से अपनी आंखें छुपानी पड़ीं। मछली की आंख वाले व्यक्ति ने पूछा यह आंखें क्यों छुपा रहे हो ?

—काऊंटर पर खड़ी औरत कितनी निर्लज्ज है। बिल्कुल नगी खड़ी है। उसने कहा। जवाब देने वाला व्यक्ति हसा—यह औरत नग्गी नहीं है। इसने नगेपन का लिबास पहना हुआ है। यह केवल निर्वस्त्र दिखाई दे रही है। है नहीं।

अब वह बहुत गौर से काऊंटर पर खड़ी स्त्री को देखने लगा। और अपने दिमाग ही दिमाग में लिबास बनाने वाले की प्रशंसा करने लगा। उसने आज तक एसा लिबास कहीं नही देखा था और न ही कभी ऐसे लिबास की कल्पना कर सका था, जो पहन लिया जाए और आदमी सिर से पांव तक नंगा दिखाई दे। वास्तविक और स्वभाविक नंगा।

—देखिए। इस व्यक्ति ने मुझ से अभी अभी एक प्रश्न किया है। मैं उत्तर देने की अनुमति चाहता हूं। मछली की आंख वाले व्यक्ति ने प्रार्थना की।

—प्रश्न क्या है ? औरत ने कांऊटर पर रखी नियमावली के पन्ने पलटते हुए पूछा।

—प्रश्न है, क्या मै इसे पहले पहचानता था।

वह औरत पन्ने पलटती रही। फिर कुच्छ क्षणों पश्चात् धीर-गम्भीर होकर बोली—

—उत्तर देने का नियम भी बदल चुका है। परन्तु पुष्ठि कहीं

दिखाई नहीं दे रही हैं । तुम अपना और इस व्यक्ति का नाम लिखवा दो और इसे उत्तर दे दो।

—तुम्हारा नाम क्या है ? उससे प्रश्न हुआ।

—मैं प्रायः अपना नाम भूल जाता हूं । पुरानी बीमारी के कारण ऐसा है।

—नाम तो तुम्हें अवश्य बताना पड़ेगा। औरत ने कहा।

—मुझे सोचने का अवसर दीजिए । उसने प्रार्थना की।

वह औरत उसे विस्मय से देखने लगी—यहां तुम नए मालूम होते हो । यह नियम भी बदल चुका है। पहले नियम था, सोच लो–फिर बोलो। अब नए नियमानुसार झट कह दो, झट कर दो। बाद में सोचो या न सोचो, तुम पर निर्भर है।

—मेरा नाम.. नाम आदमी लिख लीजिए।

—आदमी ? औरत चिल्ला पड़ी। यह क्या नाम हुआ। अगर तुमने इस प्रकार का मज़ाक दोबारा किया तो तुम्हें जबरन जंगल को रवाना कर दिया जाएगा। समझे।

वह कांप गया। दयनीयता से कहा—याद आया । मेरा नाम उल्टा है। उल्टा।

—हां लिख लिया गया है । लेकिन तुम्हें अपना नाम भी बोलना नहीं आता। आईन्दा तुम अल्ट्रा कहोगे।

फिर औरत ने मछली वाली आंख के आदमी से पूछा। उसने फौरन बताया—मेरा नाम मछली है।

औरत ने उत्तर देने की अनुमति देदी। मछली की आंख वाला उत्तर देने लगा—हां। मैं तुम्हें बहुत देर से जानता हूं । तुम मेरे

पड़ोस में रहते रहे हो और मुझे याद है तुम्हें कागज़ एकत्रित करने और उन पर बड़े-बड़े अक्षर लिखने और उन्हें फाड़ कर उड़ाने का बहुत शौक रहा है। और मैं उन दिनों वह फटे हुए कागज़ लेकर बस्ती में घूमता रहा हूं और टूटे दरवाज़ों, टूटी खिड़कियों, रोशनदानों और टूटी दीवारों को उन कागज़ों के पैवन्द लगा कर जोड़ता रहा हूं। मेरा पहला नाम मछन्दर था, अब मछली है।

—वह हैरानगी से मच्छन्दर को देखता रहा। फिर उसने पूछा—तुमने यह क्या भेस बना रखा है ?

—तुम्हारा प्रश्न सीधा है। उत्तर बहुत टेढ़ा है। मैंने भेस बनाया नहीं है। अपने असली भेस में आ गया हूं। मैं लोगों की आंखों में मछलियां जड़ने का धन्धा करता हूं। यह तिजारत आजकल ज़ोरों पर है। तुमने सुना ही होगा, जैसा धर्म, वैसा कर्म, वैसा ही चरम।

दोनों दुकान से उतरने लगे तो औरत ने कहा अब तुम जा सकते हो। परन्तु एक दूसरे को कोई प्रश्न नहीं पूछ सकते।

—हम एक दूसरे के लिए अजनबी हैं। हम प्रश्न क्यों पूछने लगे। यदि अवश्यकता पड़ी तो अनुमति लेलेंगे। मछली ने कहा। उल्टा और मछली दोनों बाहिर आ गए।

सड़क पर पहुंचते ही उल्टा ने इधर उधर देखा और मछली से पूछा—यह क्या तमाशा हैं ? तुम मेरे पड़ोसी मछन्दर हो। हम दोनों एक दूसरे को कुच्छ पूछ क्यों नहीं सकते ?

—तुम्हें मेरे साथ कुच्छ दिन बिताने होंगे। तभी उत्तर दे सकूंगा। इस समय यही कह सकता हूं कि पूछने का कोई लाभ

नहीं है। हम दोनों अजनवी हैं। फिर नई बस्ती के नए विधान के अनुसार अतीत को दुहराना स्वयं को किसी जाल में डालने से कम नहीं हैं।

—हम एक साथ चल तो सकते हैं ? उसने पूछा।

—हां। एक साथ हर स्थान पर आ जा सकते हैं।

दोनों चल पड़े। मछली आगे-आगे और वह पीछे पीछे। एक चौराहे में पहुंच कर वह एक लम्बे चौड़े चमकती धात के इश्तिहार को वह रूक कर कि-कर्तव्य विमूढ़ सा देखने लगा। इश्तिहार की छाती पर चम-चमाते सुनहरे अक्षरों में लिखा था :— होंट वाद, पलक वाद, आंख वाद, कानवाद और छातीवाद के साथ साथ अब शरीरवाद को भी मान्यता मिल गई है। यह शरीर वाद अब लिखा जा सकता है। धोया जा सकता है। पहना जा सकता है। भोगा जा सकता है। यहां तक कि खाया भी जा सकता है। शीघ्र ही यह पन्जीयत दुकानों पर उपलब्ध हो सकेगा।

वह अक्षण ही पूछना चाहता था कि यह "शरीर वाद" क्या बला है। परन्तु प्रश्न पूछना मुसीबत में फंसना था। अनुमति का चक्कर था। वह चुप रहा। और मछली को देखता रहा। मछली प्रश्न भांप गया। और उसे एक ओर आने का संकेत किया। जब वह दोनों चौराहे के एक कोने में पहुचे तो मछली ने उसे धीरे से कहा - "शरीरवाद" भी एक नया फार्मूला है। वसती की उन्नति के लिए बारी-बारी सारे फार्मूले लागू किए जा रहे हैं। इस फार्मूले

के अन्तर्गत शरीर को हर प्रकार से प्रयोग में लाना और उसकी प्रतिक्रिया का हिसाब जोड़ना सम्मिलित है।

फिर मछली ने एक राक्षसनुमा आदमी की ओर अंगुली तान कर कहा--देखते हो उस आदमी को । वह इश्तिहार पर पहरा दे रहा है।

—इश्तिहार पर पहरा ? मैं समझा नहीं । उसने कहा।

—बस्ती की ईंट-ईंट पत्थर-पत्थर और कण-कण बदल गया है, परन्तु कुच्छ सिरफिरे लोग अब भी बच गए हैं जो बिल्कुल नहीं बदले । यह राक्षस आदमी उन्हीं की ताक मैं रहता है । मछली ने कहा।

—वे लोग क्या करते हैं ? उसने पूछा।

—पागल क्या नहीं करते हैं । बहुत हंगामा करते हैं । कभी इश्तिहार फाड़ने का यत्न करते हैं । कभीं बस्ती के बड़े-बड़े चेहरे वालों और ईंट-पत्थर वालों को पागल कहने लगते हैं । कभी तो वे बहुत अनहोनी बातें सुनाते हैं।

—क्या अनहोनी ? उसने धीरे से पूछा । परन्तु साथ ही उसे लगा राक्षसनुमा आदमी उसे घूर रहा है।

—चिल्लाते हैं इश्तिहार रो रहा है । छाती पीट रहा है । मछलीं ने हस कर कहा।

—इश्तिहार भी रोते हैं ? उसने पूछा । मछली ने व्यंग्यात्मक दृष्टि से उसे कहा वही पागल लोग जाने या फिर दीवार पर लगा इश्तिहार।

—सुनो मछन्दर ! मुझे भी कई बार लगा है कि इश्तिहार रो

रहा है। छाती पीट रहा हैं। कह रहा है। मैं विवश हूं। कागज़ी जो हूं। मुझ पर बलात ही झूट-सच लिख दिया जाता हैं। जो कुच्छ मेरी छाती पर लिखा है उसे सच मत समझो।

मछली इस प्रकार हंसा कि उसे मानों दौरा पड़ गया हो। फिर कुच्छ सम्भल कर कहा—तो तुमभी उन्हीं पागलों के परिवार के सदस्य हो। परन्तु दिखाई नहीं देते।

अकस्मात उसे अपने कन्धे पर इक भारी हाथ का बोझ अनुभव हुआ। फिर भारी हाथ वाले ने भारी-भरकम स्वर मे पूछा—अभी अभी तुम क्या कह रहे थे ?

भारी हाथ वाले की सूरत देख कर वह चिल्लाता-चिल्लाता रह गया। क्या भयानकता की चरम सीमा का दृष्य था कि दो आंखें अपने स्थान पर, और तीसरी आंख माथे के बीचों बीच। दो दान्त लम्बे गले से नीचे तक ढलके हुए। निचला होंट बालिश्तभर का। अंगुलियों की गांठें बहुत मोटीं और हाथ और पांव रात से भी काले।

—मैं ! मैं कह रहा था इश्तिहार मुझे रोते और बिलखते हुए महसूस होते हैं। उसने डरते-डरते कहा। भारी हाथ वाला हंसा। जानों वह मसलने से पूर्व च्यूंटी की देह पर हंस रहा हो। फिर कहने लगा—ऐसी बातें कहा नहीं करते। यदि कहनी ही पड़ें तो होंट बन्द करके, और जीभ को दान्तों में रख कर कहनी चाहिए। फिर वह चलने लगा तो उसने कहा—सुनो राक्षस भैया। तुम सचमुच राक्षस हो या तुम्हारा दिखावा राक्षसों जैसा है ?

—तुम्हें शायद मालूम नहीं। राक्षस ने कहा। पहले यौवन और सुन्दरता असली थी उसकी रक्षा के लिए असली राक्षस होते थे।

अब सौन्दर्य और यौवन बनावटी हैं । राक्षस भी बनावटी हैं । मैं राक्षस नहीं हूं । मैंने राक्षस का चेहरा और लिबास पहना हुआ है । परन्तु इतना अवश्य है कि राक्षसों वाले सारे अधिकार मुझे मिले हुए हैं ।

राक्षस जब दूर चला गया तो मछली ने कहा—भाई उल्टा ! बस्ती की प्रगति का, उन्नति और आधुनिकता का कुच्छ ख्याल किया करो । बात कहते समय खोपड़ी की सभी आंखें खुली रखा करो ।

दो

बसती बहुत आधुनिक हो चुकी थी। प्रगति तो कहो कि हवा से तेज़ हो रही थी। नई बसती में नए विधान, नए नियम, नए धन्धें, नए कारोबार, नया वातावरण, नए घर, नई गलियां नई सड़कें, नए इश्तिहार. नए चौराहे, नए चेहरे, नए पेट, नए पांव, नए बड़े लोग, नए छोटे लोग, नए नंगे लोग, नए ढ़के लोग, तात्पर्य यह कि समस्त और सर्वथा नया हो गया था।

बसती में परिवर्तन लाने तथा आने के दिनों में एक इश्तिहार बहुत लोकप्रिय हुआ था। उसका विषय बहुत प्रभावशाली तथा आर्कषक था। उसके विषय को लेकर डौंड़ी पिटवाने और मुनादी करने के नए तथा आधुनिकतम तरीके अपनाए गए थे। विषय कुछ इस प्रकार का था—पुरानीं चीज़ को हटा कर नई तब सजानी चाहिए, जब पूर्ण विश्वास हो जाए कि पुरानी, बहुत पुरानी है नई से और नई बहुत नई है पुरानी से। अब आधुनिकतम वस्ती वालों के निर्मित आधुनिक यन्त्रों से यह प्रमाणित हो गया है कि बस्ती की बहुत सी वस्तुएं तथा पदार्थ बहुत पुराने हो गए हैं। इन्हें बदलना परमावश्यक है :—

—सूर्य बहुत पुराना हो गया है। बदलना अनिवार्य।

—हवा बहुत बूढ़ी और पुरानी हो गई है। नई अत्यावश्यक।

—पानी भी बूढ़ा-पुराना और धुन्धला हो गया है। नया आवश्यक है।

—बहुत सारे घर बहुत पुराने हो चुके हैं। उनका हटाना अत्याधिक ज़रूरी।

--पुराने मकानों, सेहनों दीवारों और पुरानी चार दीवारी में रहने वाले लोग स्वभावतः पुराने हो चुके हैं उन्हें वहां से हटाना अनिवार्य।

फिर बसती में उन लोगों ने, जिन में आधुनिकता और नए पन के लाने की शक्ति सामर्थ्य तथा सत्ता थी। बहुत से लोगों की सहायता से पुराना क्या कुछ नहीं हटा दिया था। और आधुनिक क्या कुछ नहीं सजा दिया था।

पुराने केश, पुरानी आंखें, पुराने श्रवण, पुरानी जीभें; पुराने पेट और छातियां, पुराने गर्भ और टांगे पुरानी गलियों के पुराने मोड़, पुराने वृक्ष और उनके पुराने ढंग के पत्ते, पुराने दरवाज़े, खिड़कियां रोशनदान और चौखटें, पुराने दिमाग़ और पुराने अक्षर, पुराने शब्द और उनके धातु, सभी कुछ बदलते जा रहे थे। अपने स्थान से हटा कर नए सजाए जा रहे थे। जो जीव, जो वस्तु, जो पदार्थ ही बने रहना चाहता था, उसे निर्वासित किया जा रहा था। जो पुरानी आंखों से नई चीज़ को देखता हुआ पकड़ा जाता उसकी पुरानी आंखें जमा करली जाती और नई जड़ दी जाती। यदि वह न मानता तो उसे रोशनी, दृष्य और दूरी से वंचित किया जा रहा था।

जब आधुनिकता नवीनता और प्रगति ने अपने पांव जमा ही लगभग लिए तो फिर प्रगति की गति अतितीव्र से केवल तीव्र रह गई। परन्तु वह भी उन्नति तथा आधुनिकता के हेतु कम नहीं थी।

इस प्रगति आधुनिकता तथा नएपन की दौड़ में कुछ लोग ऐसे भी थे जो चाहने पर भी सम्मिलित न हो पाए। उनके लिए नए नए धन्धे तथा काम जारी किए गए।

जो लोग आधुनिक बसती के नए नियमों विधानों से सहमत नहीं थे उन्हें उनके सम्मानार्थ उन्हें सुन्दर-सुन्दर कश्तियां भेंट की गईं और उनसे प्रार्थना की गई, वह सदा दरिया पर हिचकोले खाते तैरते और लहरें गिनते रहें। चाहे दरिया में पानी हो या न हो।

जो लोग नई बसती के वातावरण को देख नहीं सकते थे उन्हें विशेष प्रकार के आईने भेंट किए गए। जिनमें वे सदैव अपना मुंह देखते रहें और देख-देख कर खुश होते रहें। चाहे आइने अन्धे हों या धुन्धले।

जिन्हें नई बसती की नई बातें सुनना सहन नहीं होती थीं, उन्हें भेंट के तौर पर धात के बने ऐसे पक्षी भेंट किए गए जो उनसे तर्क वितर्क करके उनको हंसाते रहें।

जिन्हें सामूहिक तौर पर बसती ही पसन्द नहीं थी उनसे बस्ती से कुछ दूरी पर बनाए कृत्रिम मरूस्थल में जाने की प्रार्थना की गई। और उनसे अनुरोध किया गया कि उस बनावटी मरूस्थल में से कितनी लैलाएं, कितने कैस और कितने काफिले गुज़र चुके हैं, इसका हिसाब बैठ कर या उठकर जोड़ते रहा करें। चाहे उस बनावटी रेगिस्तान में रेत हो न हो। धूल उड़े न उड़ें। बवन्डर उठे न उठें।

फिर बसती के नज़ारे ही और थे। कांटे दूर—सब दूर ही दूर। तरक्की, नवीनता, आधुनिकता नयापन तत्परता इन सब दौड़ों में भागम भाग में, धीरे धीरे एक त्रुटि बनी रह कर, अब बढ़ रही थी।

और नियम-निर्माताओं विधान विशेषज्ञों तथा उनके साथ जुड़े परिवर्तनाकांक्षी लोगों को चुभने लगी थी। वह त्रुटि थी कुछ ऐसे लोगों का बसती में रहस्यपूर्ण ढंग से बसे रहना, जो आधुनिक नियमों असूलों को कदापि स्वीकार नहीं कर रहे थे और बड़े चमत्कारी ढंग से स्वयं को छुपा रहे थे। वे लोग थे तो बसती में गिनी जाने वाली पागल जाति में ही। परन्तु एक बड़ा अन्तर यह था कि पागल जाति के लोग खन्डन करने ही तक सीमित थे परन्तु छुपे रहने वाले लोग पुराने तथा नए दोनों नियमों तथा व्यवस्थाओं से असन्तुष्ट थे। और किसी तीसरी व्यवस्था की प्रतीक्षा में थे। उस तीसरी होने वाली व्यवस्था के प्रति नियम निर्माताओं में चिन्ता पाई जाती थी।

उन्हें इसके लिए, चिन्ता निवारण हेतु एक अधिवेषण बुलाना पड़ा। अधिवेषण के लिए कई स्थान देखे गए। परन्तु अनुचित ठहरा कर बसती भर में इश्तिहार लगवाए गए, मुनादी करवाई गई। डौंडियां पिटवाई गई: —

– नई बसती में एक नए अधिवेषण की तैय्यारी की जा रही है। यह अधिवेषण आप का होगा, आपके द्वारा होगा और आप के लिए होगा। इस लिए बसती वालों से प्रार्थना है कि अधिवेषण के निर्माण हेतु सहयोग दें। सहयोग एकत्र करने के लिए बस्ती के चन्द लोगों को निज़ामी परिन्दों का लकब देकर भेजा जा रहा है। उन्हें पहचानने में गल्ती न खाएं। उनकी पहचान यह है कि वे एक ही समय में मर्द भी दिखाई देते हैं और औरत भी। इस पर आकर्षण यह है कि वे लोग ना ही मर्द हैं न ही औरत।

यह एक इश्तिहार जब लगा। डौंडी आदि पिटी। बसती के लोग काफी सतर्क हो गए। यह सोच कर कहीं गलती न खा जाएं

और ग़लत आदमी को सहयोग न देदें। बसती का हर जीव निज़ामी परिन्दों की प्रतीक्षा करने लगा।

बहुत दिनों तक वसती में ऐसे आदमी, जो एक ही समय में औरत और मर्द दिखाई दें और वास्तव में हों नहीं, दिखाई नहीं दिए। कोई भी किसी से भवन निर्माण के लिए सहयोग मांगने नहीं आया तो कुछ लोग बहुत दुखी हुए। उन्होंने एक बड़ा जुलूस निकाला। जुलूस ने लिखित रूप से ज्ञापन पकड़ रखे थे। जुलूस का अन्त और विसर्जन एक चौराहे में होना निश्चित था। जब भीड़ चौराहे में पहुंची तो कुछ लोगों ने भाषण दिए। छोटे-छोटे परन्तु बहुत प्रभावशाली भाषण। एक ने कहा – निज़ामी परिन्दों की प्रतीक्षा करते-करते हमारी आंख में तैरती मछलियां अचेत हो गईं।

—हम तब से अब तक जाग रहे हैं। यह हम पर अत्याचार हुआ है। निज़ामी परिन्दे क्यों नहीं भेजे गए ? दूसरे ने कहा ?

— सहयोग देने से अधिक लालसा हमें उनको देखने की थी। तीसरे ने कहा।

—हमें अधिवेषण भवन अवश्य चाहिए ?

—हमें अधिवेषण अवश्य चाहिए।

—हमें हमारा, हमसे और हमारे द्वारा का अधिवेषण अवश्य चाहिए।

अन्त में एक आदमी जो देखने में एक ही समय में जवान और बूढ़ा स्त्री और पुरुष, छोटा और बड़ा दिखाई देता था, चौराहे के मध्य आया और कहने लगा :—

—बसती के लोगो। आपको भ्रम हुआ है। निज़ामी परिन्दे आए भीं और सहयोग एकत्रित करके ले भी गए। भवन निर्माण कार्य

भी प्रारम्भ हो चुका है । अब आप सब लोग अधिवेषण की प्रतीक्षा करें ।

सभी हतप्रद होकर उस आदमी को देखने लगे । फिर दो चार आदमियों ने आगे बढ़ कर पूछा —वे लोग कब आए ? किस किससे मिले ? कहां कहां से सहयोग इकट्ठा किया ? किसने उन को देखा ?

— सबने देखा होगा । मेरा यह विश्वास है । किसी ने उन्हें सोते में देखा होगा, किसी ने जागते में । उनके आने का कोई समय निश्चित नहीं था । वह आए और गए । सभी कुछ ले गए और आपको विदित नहीं होने दिया । यह उनका चमत्कार है ।

उस आदमी की बात पर बसती वालों ने जो तालियां पीटीं, यदि रात होती तो आकाश से तारे टूट कर सब की झोलियों में आ गिरते । दुर्भाग्य-वश वह दिन का समय था इस लिए सबके सिरों पर गर्द तो चढ़ ही गई ।

जब जुलूस बिखरने लगा तो मछली ने कहा—उल्टा भाई चलें ?

—हां । चलें । परन्तु समझ में नहीं आया कि लोग क्या चाहते थे और क्या चाहते हैं ? उसने कहा ।

—वास्तव में यह सब लोग उनकी आकृतियां देखने के इच्छुक थे । और अब भी नहीं समझ पाए, यह जो आदमी भाषण कर्ताओं में अन्त में था वह भी निजामी परिन्दा था । मछली ने कहा ।

—मुझे तो कुछ विशेष अन्तर उसमें दिखाई नहीं दिया । उसने कहा ।

—यही तो चमत्कार की बात है । जो मर्द है वह मर्द दिखाई नहीं देता । जो औरत है वह औरत दिखाई नहीं देती । जो मध्य की

जाति का जीव है, वह पहचाना नहीं जाता । यह आधुनिक बसती की आधुनिक विशेषता है। मछली ने हंस कर कहा।

—तुम लोग क्या बातें कर रहे हो ? एक स्त्री ने उनके निकट आकर पूछा।

—हम लोग आजके जुलूस की सफलता की बात कर रहे थे। मछली ने कहा। औरत बहुत घातक विधि से मुस्कराई।

—तुम्हें यह पूछने का अधिकार किस ने दिया ? उसने औरत से पूछा !

—मेरे स्त्रीपन ने। तुम भी स्त्री बनजाओ, तुम्हें भी पूछताछ का आधिकार प्राप्त हो जाए गा। स्त्री ने व्यंग्य भरे स्वर में कहा। मछली ने बात टोक कर कहा—तुम सममुच स्त्री हो, या भेस बना रखा है ?

—मैं स्त्री हूं। जन्म से ही। और स्त्री रहूंगी। परन्तु मुझे छूना नहीं। कह कर वह दूर हट गई। मछली आगे बढ़ा और हाथ बढ़ा कर पूछा—यदि तुम्हें मैं छू लूं तो क्या होगा ?

—बहुत बुरा होगा। मैं फट जांऊगी। कागज़ की भान्ति। मेरा शरीर अस्तित्व कागज़ी है। छुआ कि टुकड़े - टुकड़े हुआ।

—तुम हमें प्रश्न क्यों कर रहीं थी ? उसने पूछा।

—यूहीं। तुमसे परिचय की आकांक्षा हुई !

दोनों कुच्छ निश्चिन्त हुए कि वह औरत राक्षस के गिरोह की नहीं है।

—अधिबेषण कब होगा ? मछली ने स्त्री से पूछा !

—होगा तो अवश्य। भवन निर्माण के पश्चात। परन्तु इससे पहले, भवन देखने की चीज़ है।

तीन

अर्ध रात्रि का समय होगा कि वह हड़बड़ा कर उठ बैठा। उसे अनुभव हुआ कि कहीं बहुत समीप ही जेल का घडियाल बजा है और बज कर सोए लोगों को जगा रहा है।

अटपेट में दुविधा में फंसा वह तिकोने से अन्धे आंगन को शीघ्रता से पार कर ढयोढ़ी में पहुंचा। द्वार खोले। बाहिर बहुत रौनक थी। गली चल रही थी ! समझ में न आया कि आधी रात को सारी बसती क्यों जाग गई है। गली में पांव रखा ही था कि सामने वाले दैत्याकार मकान की दीवार पर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा था—अब रात्रि और दिन में कोई अन्तर नहीं है।

वह यह प्रश्न स्वय से पूछने ही को था कि मुनादी का स्वर कानों में पड़ा—

—अब सोने और जागने के लिए दिन तथा सूर्योदय की प्रतीक्षा नहीं करने पड़ेगी ! यह अन्तर मिटा दिया गया है। हम निज़ामी परिन्दे हैं। अब हम लोगों को सुलाया और जगाया करेंगे। इसमें कुच्छ इच्छा लोगों की होगी और कुच्छ इच्छा हमारी।

उसने उस आदमी का दो चार क़दम पीछा किया जो मुनादी दे रहा था ! समीप पहुचते ही उसे एक झटआ सा लगा। मुनादी देने वाले की खोपड़ी के चारों ओर आखें थी। मुंह में तीन

जीभें थीं। और हाथ और बाजू किसी धात के बने लग रहे थे। वह निर्वस्त्र था। परन्तु उसका कोई भी अंग साफ दिखाई नहीं दे रहा था!

—दिन और रात का अन्तर कब से मिटा दिया गया है? उस ने मुनादी वाले से पूछा।

मुनादी वाला पहले तीन स्वरों में हंसा। फिर उसने कहा—'मैं पहले सच बोलूंगा, फिर झूट बोलूंगा और फिर तुम्हें असली बात बताऊंगा।

उसे आश्चर्य हुआ। पूछा—पहले झूट, फिर सच, फिर असली बात? एसा क्यों?

मुनादी वाला कुच्छ क्षणों तक सोच में डूबा रहा। फिर उसने शायद निश्चय किया कि बता देने में क्या हर्ज है। इसी भाव को लेकर उसने कहा—बसती की प्रगति, उन्नति चाहने वालों ने कुच्छ दिन हुए, निज़ामी परिन्दों की भरती की थी! मुझे भी वहां स्थान प्राप्त हो गया था। सभी निज़ामी परिन्दों में एक उच्च विशेषता यह देखी गई थी कि उनके एक ही मुंह में तीन जीभें लगी हुई थीं! उन तीनो का कार्य अलग-अलग निकला था। पहली जीभ झूट बोलती थी, दूसरी सच कहती थी और तीसरी असलियत बताती थी!

—सच और वास्तविकता में कुच्छ अन्तर तुम महसूस करते हो? उस ने पूछा।

—मैं तुम्हें धीरे से बताए देता हूं। वरना मुझे उत्तर देने की अनुमति लेनी पड़ेगी। बसती के नियमों में झूट वह भाव है जो वाक-सिद्धि, कर्म-सिद्धि, तत्व-सिद्धि और अर्थ-सिद्धि के हेतु प्रयोग किया जाता है। सच वह भाव है जिसके द्वारा दन्ड-सिद्धि अपराध-

सिद्धि, कुटिलता - सिद्ध, कुकर्म-सिद्धि और व्यभिचारिक-सिद्धियां, प्राप्त की जाती हैं। और असलियत वह भाव है, जिसका ज्ञान न तुम्हें हो, न मुझे हो और नहीं कभी किसी को हो सके।

बातों के समय में उसे मछली आता दिखाई दिया। उसके साथ शायद कागज़ी युवती भी थी! उसके एक क्षण चुप रहने ही भर में मुनादी घुमाने वाला आगे बढ़ गया और हांक लगाने लगा।

बातों के समीप पहुंचते ही उसने प्रश्न किया – यह तमाम बस्ती वाले आधी ही रात को क्यों जाग गए हैं?

—तुम चाहते हो कि भ्रम - भ्रम ही बना रहे। कभी भी यथार्थ का अनुभव और अनावरण न हो!

—मैं समझा नहीं। उसने असमंजस में रहते कहा!

—दिन और रात, प्रभात और सन्ध्या, रोशनी और अन्धेरा समय और मौसम यह सब काल्पनिक है। धारणाएं है। केवल घड़ी गई मान्यताएं मात्र। यथार्थ यह है कि कभी भी रात कही जा सकती है और दिन समय की किसी भी अवस्था अथवा चित्र को कहा जा सकता है। अब बस्ती में सभी मूल्य-मान्यताएं बदल गई हैं। रात्रि और दिवस का भी अपने स्थान से हटना और भागना अनिवार्य था! हमें प्रसन्नता होनी चाहिए कि हम बन्धन मुक्त हुए हैं। कैद से छूटे हैं, दिन और रात के पुराने नियम की कैद से।

मछली बोलता जा रहा था कि युवती को हंसी आई। एक क्षण मछली की आखों में झांक कर उसने कहा – तुम अपने धन्धे की की भांति बातों में भी निपुण हो। मछलियां जो तुम आखों में जड़ते हो, बहुत चंचल और अनिश्चित होती है। तुम्हारी बातें भी मछलियां हैं।

युवती की बात सुनकर वह बहुत प्रभावित हुआ । उसकी समझ में आया कि मछली जो कुच्छ कहता है उसमें कुच्छ फिसलता हुआ अनिश्चित भाव अवश्य होता है ।

—मैं ने हांक सुनी और बाहिर भागा । यह देखने केलिए कि बस्ती मे क्या हो रहा है , . . .!

युवती ने बात काट डाली—जब से बस्ती में नए पन की हवा ने प्रवेश किया, तभी से बहुत लोग दिन को सोते और रात को जागते आ रहे हैं ! यह बात केवल तुम्हारे लिए नई हो सकती है ।

सभी बाज़ारों में रौनक ज़ोरों पर थी ! दुकानें सजी - सजाई बैठी थी । दिन में दूकानों का जो आकर्षण गौन रहता था, वह मुखर दृष्टि गोचर हो रहा था ! हर प्रकार के लोग हर प्रकार के धन्धों में व्यस्त थे । एक नई बात यह हुई थी हर दूकान के प्रवेश पर आदम क़द आईना लगा दिया गया था जिस में आते तथा जाते ग्राहक को अपना सब कुच्छ अवश्य दिखाई दे ! हर आईने के माथे पर मोटे मोटे सुन्दर अक्षरों में लिखा था—खरीद चाहे इच्छा की हो परन्तु आईना देखना आवश्यक है ।

वह रूक कर देखने लगा कि उसका मुंह काफी आर्कषक हैं ! परन्तु उसमें अजनबीपन है ! उसने पास खड़े मछली से कहा— मुझे मेरा मुंह कुछ अपरिचित सा लग रहा है । तुम भी ज़रा आईना देखो !

मछली आईने के सामने हुआ कि हट गया ।

—क्या हुआ ? उस ने पूछा ।

—मुझे तो मेरा चेहरा मेरा ही नहीं लगा । मुझे विश्वास है यह आईना झूट बोलता है ।

दूकान बहुत भारी थी। सब कुच्छ शो केसों में बन्द था और धुन्ध से ढ़का हुआ था। दुकान्दार बहुत आर्कषक जीव था। उसके शरीर के दो भाग हो गए से थे ! एक भाग में सुन्दर केश, एक आंख में काजल, आधे होंट पर सुर्खरंग, एक छाती, एक कूल्हा भारी और एक पांव में पाज़ीब। एक हाथ में कंगन।

अब दूसरे में, सिर पर एक सींग। एक लम्बा दांत और पूंछ के स्थान पर किसी पक्षी का भयानक सा पर, एक हाथ मैं विचित्र सा अस्त्र और एक कूल्हा सूखा सा, एक पांव में इसपात का भारी और कीलों वाला जूता। दुकानदार उन्हें देख रहा था। फिर वह नर्तकी और राक्षस के मिले जुले स्वर में बोला—तुम आप लोग ठीक समझे समझी हो यह आईना झूट बोलती बोलता है। परन्तु देखने वाला वाली आईना आईनी भीतर है। चले आओ। यह आईना आईनी सच बोलेगा बोलेगी !

तीनों भींतर घुसे ! आईना दिखाई न दिया। दुकानदार ने बड़े रहस्यमय ढंग से आदम कद के खूबसूरत आईने के शरीर से विद्युत की महीन तारों वाला वस्त्र हटाया और कहा—इसमें देखो देखी !

शीघ्रता से वह आईने के सामने गया ! आईने को घूरता रहा फिर मछली से कहा—तुम देखो तो। जो कुच्छ मैं ने देखा है क्या वही सच है।

मछली आगे बढ़ा ! और एक मोटी सी गाली दे कर एक ओर हट गया। उसने पूछा :—

— कुच्छ देखा ?

—हां देखा ! यह साला मुझे बेवकूफ बना रहा है।

—मुझे भी यही दिखाई दिया। मैं भी तो वह नहीं हूं ! उसने क्षुब्ध होकर कहा।

—तुम वह क्या नहीं हो ? युवती ने पूछा।

—तुम भी,आईने में देखलो !

युवती आगे बढ़ी। वह बहुत परेशान हो गई। परन्तु बोली नहीं। दुकानदार भांप गया। युवती के समीप आते हुए बोला :—

—तम कुछ परेशान दिखाई देती हो !

—हां। बहुत विचित्र लगा मुझे ! मैं इस में नारी बिल्कुल दिखाई नहीं देती। युवती के साथ दोनों ने स्वर मिलाए।

—हम भी कुछ और ही दिखाई दे रहे हैं।

—हो सकता है इस आईने में दिखाई देने वाला रूप ही तुम सबका असली रूप हो। यह आईना झूट नहीं बोलता बोलती हैं।

—इस आइने में मैं न तो नारी दिखाई देता हूं न पुरुष। इसने मुझे इन दोनों ज़ातों से हटा कर कोई तीसरी ही ज़ात प्रभाणित कर दिया है। उसने कहा।

—यह तो बहुत अच्छा हुआ। तुम न नारी रहे न पुरुष। तुम्हारी एक मौलिक ज़ात स्थापित हो गई ! पुरुष तुम्हें पुरुष समझें गे और नारी तुम्हें नारी समझें गी। तुम दोनों ज़ातों के समीप रहो गे और अपनी असलियत भी बरकरार रखो गें। यह दूसरे ही, एक निज़ामी परिन्दे के रंग-ढंग के आदमी ने कहा। जो अचानक कहीं से निकल आया था !

वह, मछली और युवती कुच्छ क्षणों तक विचारों में डूबे रहे। फिर बहुत चिन्तित होते हुए उसने कहा :—

—यह आईना झूट बोलता है या सच, मैं नहीं जानता परन्तु,

मुझे बताया गया है कि मैं एक पुरुष ही पैदा हुआ था।

—मुझे भी यही पता है कि मैं मर्द पैदा हुआ हूं। मछली ने कहा।

—और मैं नारी पैदा हुई थी। युवती ने कहा।

उधर दूकानदार और निज़ामी परिन्दे ने ठहाका लगाया -- बस्ती का हर आदमी यही कहता आया है कि वह मर्द पैदा हुआ था। परन्तु वह कितना मर्द है, कितना औरत है और कितना तीसरी ज़ात का है, यही निर्णय करने के लिये इन आईनों का आविष्कार किया गया है ! निज़ामी परिन्दे ने कहा !

— और नारी भी चिल्लाती, चिल्लाता आई आया है कि मैं नारी पैदा हुई थी। परन्तु वह कितनी - कितना नारी है, और कितनी तीसरी ज़ात है, यह आईने यही तो निर्णय करती-करते हैं।

तीनों का अन्तस बहुत क्षुब्ध था। तीनों बाहिर निकलने लगे। मछली ने रूकते-रूकते पूछा - कोई चीज़ खरीदना अवश्यक है ?

—तुम्हारी इच्छा।

—यहां इस दुकान में क्या क्या उपलब्ध है ?

—यहां ? दुकानदार ने चहक कर बताया—क्या नहीं है ! यहां आंख का इशारा है, बाजू का खम है, कमर की लचक है, पाज़ीब की रूनझुन है, हिना की खुश्बू है। और सब से बड़ी और नवीनतम वस्तु हैं, सासों की ठंडक और ज़हन की गर्मी।

तीनों सुनते गए और बाहिर निकलते गए। सड़क पर पहुंचते ही मछली ने कहा—हम आपसमें अपरिचित हैं। इकठ्टे चल सकते हैं परन्तु प्रश्न - उत्तर वार्तालाप नहीं हो सकेगा !

सड़क दा दामन जहां जाकर खुलता था और दो सड़के अकेली-

अकेली होकर भिन्न दिशोंओं को भागती थीं, वहां शायद बहुत बड़ा नाटक-गृह था ! उसकी ऊंचाई देखने केलिए, लेट कर आकाश की ओर देखना पड़ता था। गोलाकार होने से आर्कषक भी था और उसके चारों ओर चान्दनी सा प्रकाश दूर दूर तक बिछा हुआ था। बराबर अन्तर पर भरे लदे वृक्ष मन्दिरों की भान्ति खड़े दिखाई दे रहे थे। परन्तु वहां शायद कोई कार्य क्रम नहीं था इस लिए कोई भीड़ अथवा शोर नहीं था।

उस ने मछली की ओर सांकेतिक दृष्टि से देखा। मछली ने युवती की ओर ! फिर तीनों उस विशालकाय नाटक-गृह की ओर चलने लगे। रास्ते में जो वृक्ष पड़ते थे उनके पत्तों की चमक-दमक कुच्छ अनोखी थी। वह एक वृक्ष के समीप गया और एक पत्ता तोड़ने का प्रयास किया। परन्तु पत्ता टूटा नहीं ! सभी पत्तों की चमक में तेजी आगई।

वह सड़क पर लौट आया। मछली ने धीरे से पूछा—उल्टा भाई। पत्ता तोड़ लाए ?

—यह पत्ते किसी धात के बने हैं। केवल रंग पत्तों सा है। तोड़ने लगो अंगुलियां छिलती हैं।

युवती फूल तोड़ने के बारे में सोच रही थी। उसकी बात सुन कर इरादा छोड़ दिया।

आगे पीछे, अपरिचित मुद्राओं में तीनों चलते हुए, जैसे जैसे नाटक गृह के समीप पहुंचते गए, वहां कुच्छ लोग कार्य में व्यस्त दिखाई देने लगे।

नाटक - गृह के बहुत समीप पहुचने पर एक ऊंची पारदर्शी शीशे की दीवार ने उन्हे रोक लिया। और झट ही एक विचित्र

सा प्राणी वहां उपस्थित हुआ। जिसे देखते ही वह गद् गद् हो गए और उसकी प्रशंसा करने लगे।

वह प्राणी मृत्यु तथा देवलोक के सौन्दर्य का मिश्रित रूप सा दिखाई दे रहा था। सिर पर जटा और जूड़े में वेणी। हाथों में धात के श्वेत फूलों के कगन। बोने क़द की चोली तथा नीचे के भाग में साढ़ी सा घेरावदार वस्त्र। हाथ में वीणा। और वह गा रहा था। गायन में माधुर्य कम था और मुग्ध करने का भाव अधिक।

मछली उसे ताड़ चुका था और दोनों मछलीदार आंखों को बन्द किए झूम रहा था। अन्त में प्राणी का स्वर ढीला पड़ा तो मछली ने कहा—तुम्हारे गायन में जादू है। और जिस विधि से तुमने इस विशाल नाटक-गृह की प्रशसा की है वह अनुपम है। अब यह बताओ कि क्या मैं इस शीशे की दीवार को फांद कर भीतर जा सकता हूं और निर्माण कार्य देख सकता हूं ?

—तुम हो कौन ? गायक प्राणी ने पूछा।

—मैं मछली हूं। आंखों में मछलियां जड़ता हूं।

—तुम्हारे साथ यह लोग कौन हैं ? गायक ने पूछा।

—मैं नितान्त अकेला हूं। जन्म ही से। इस समय भी। यह कौन हैं कब और कहां से आए हैं नहीं जानता। मछली ने उत्तर दिया।

—तुम आईना देख चुके हो ? प्रश्न हुआ।

—हां। देख चुका हूं। और अपनी मध्य की ज़ात के होने का प्रमाण तथा परिचय प्राप्त कर चुका हूं। कोई शंका नहीं है।

—तुम्हें भीतर जाने की अनुमति शीघ्र ही मिल जाएगी । यह कह कर गायक ने वीणा के तारों को छेड़ा । इस बार स्वर उठने के स्थान पर वीणा में से जुगनुओं जैसी चमक पैदा हुई । और एक आधुनिक सुन्दरता का रक्षक आधुनिक राक्षस सा दौड़ा आया। गायक ने उसे आदेशात्मक स्वर में कहा—यह बसती का एक कलाकार है। आंखों में मछलियां जड़ता है। इसे भीतर ले जाओ, और जो कुच्छ देखना चाहे दिखा दो ।

वह खड़ा सोच रहा था कि उससे भी प्रश्न होंगे । वह धन्धा क्या बताएगा और कैसे स्वीकार करेगा कि तीसरी जात अथवा मध्य की जात का होने में उसे शंका नहीं है । दूसरी ओर वह भीतर जाकर देखना भी चाहता था । अब उसकी बारी थी । उसने स्वयं ही कहना प्रारम्भ कर दिया ।

—मेरा नाम उल्टा है । बसती में जो धन्धे किये जाते है या किये जा सकते हैं, उनमें से मैं भी एक धन्धा करता हूं । नए विधान नए नियम, नवीनता, आधुनिकता प्रगति उन्नति और बसती सब पर मुझे गर्व हैं । और यह जो युवती खड़ी है यह मेरे लिए कई जन्मों से अपरिचित है । यह कब और कहां से आई है, इसी को ज्ञात होगा ।

उसे भी भीतर जाने की अनुमति मिल गई । वह भीतर चला गया परन्तु उसका ज़हन युवती में अटका रहा । वह धीरे धीरे चल रहा था कि युवती भी आ पहुंची । उसने पूछा—तुमने क्या कहा ?

—एक ही बात कही । मैं निज़ामी परिन्दा हूं । उसने प्रमाण मांगा । मैंने मुंह खोला । उसने कहा, यहां तो एक ही जीभ है । मैंने कहा, सैर को निकली हूं एक जीभ घर रखकर आई हूं । वह

प्रसन्न हो गया और अनुमति देदी।

निर्माणाधीन भवन को देखते हुए हर आदमी उसके सम्पूर्ण रूप की कल्पना करने लगता था। थोड़ी-थोड़ी दूरी पर चलते हुए तीनों बाहिर की गोलाकार राह में जिसके एक किनारे पर भवन की गोलाकार दीवारें विभिन्न चित्रों तथा मूर्तियों को लिए घूमती थीं और दूसरी ओर बनावटी पौधों, कागज़ के फूलों और फलों की चमचमाती क्यारियां थी। कहीं किसी किसी झाड़ी पर बनावटी पक्षी भी बनाकर बिठाए गए थे जो कभी कभार चहकते कूकते और गीत गा देते थे। उनका स्वर, तथा लहजा निज़ामी परिन्दों से बहुत मिलता-जुलता था। दोनों ओर का सौन्दर्य तथा आर्कषण इतना मन्त्र मुग्ध कर देने वाला था कि रुक रुक कर नज़र गाड़ कर, तथा स्वयं को भुलाकर देखना पड़ता था।

वह तीनों राह की बाईं ओर से गोलाई में घुसे थे। भवन के चित्र दाईं ओर पड़ते थे।

वह तीनों तीन बड़े दीवार-चित्रों के आगे खड़े थे। चित्र उनसे मूक भाषा में वार्तालाप कर रहे थे। तथा उनसे कुच्छ पूछ-ताछ भी कर रहे थे।

पहले चित्र के सामने युवती रूकी थी और सम्मोहित सी अपलक देखे जा रही थी। चित्र में एक वृद्ध श्वेत दाढ़ी तथा श्वेत जटाओं वाला, जिसके मुखसे किरणें फूट रही थीं, हाथ जोड़ कर एक सुन्दरी के आगे गिड़गिड़ाता हुआ दिखाई दे रहा था। सुन्दरी के वस्त्र काले थे, रात जैसे। हाथ पांव, बाजू, टखने, कुहनियां, छातियां, सभी कुच्छ बहुत सुन्दर था परन्तु उसका चेहरा था ही नहीं। यदि था भी तो

कहीं छिप-छिपा गया था। युवती उसका, काले वस्त्रों वाली सुन्दरी का चेहरा ढूंढते हुए परेशान हो रही थी। उसके मनमें एक आध प्रश्न भी उठ रहा था जिसका उत्तर वह अपने ही अन्तर से पूछ रही थी। साथ साथ वह चाह रही थी कि वह उसे या मछली को आवाज़ देकर पुकारे और चित्र के बारे में पूछे।

वहुत देर तक वह खड़ी सोचती रही कि एकायक मधुर स्वर सुनाई दिया—चित्र तुम्हें अच्छा लगा ?

वह घूमी। प्रश्न पूछने वाले प्राणी को देखकर अधिक परेशान हो गई। वह औरत भी थी और मर्द जैसा भी था। और एक दम ऐसा लगता था न वह मर्द है न औरत।

—हा। चित्र वहुत अच्छा लगा। और तुम भी मुझे वहुत अच्छे लगे। मैं तुम्हारी प्रशंसा करना चाह रही हूं। परन्तु दुविधा में हूं। तुम्हें स्त्री समझकर तुम्हारी प्रशंसा करूं कि पुरुष समझ कर।

—तुम मेरी प्रशंसा एक चित्रकार के नाते ही करो। मैं एक चित्रकार हूं। जातपात और औरत मर्द के चक्कर से वहुत ऊपर उठ गया हूं। अब तो मुझे स्त्री-पुरुष, पुंसक, नपुंसक, पशु-पक्षी, हाथी-हाथिनी सब एक समान लगते हैं।

—इस चित्र का भाव मुझे समझादो। युवती ने प्रार्थना के स्वर में कहा।

—मुझे एक अच्छा चित्र बनाने के लिए शान्त सुन्दर तथा रंगीन वातावरण की सदैव आवश्यकता रही है। सब भेद भावों से ऊपर उठ कर कृति को जन्म देने की आकांक्षा रही है। इस समय वसती

का वातावरण, नियम, दस्तूर, विधान, सभी कुच्छ बहुत अनुकूल है । यही कुच्छ इस चित्र में भी मैंने दर्शाने की चेष्ठा की है ।

—यह बूढ़ा श्वेत केशों और दाढ़ी वाला, जिसके मुख से सूर्य जैसी रश्मियां फूट रही हैं । कौन है; किसका प्रतीक है ? युवती ने पूछा ।

कुच्छ क्षणों के लिए चित्रकार के चेहरे पर दुविधा तथा चिन्ता की रेखाएं खिच गईं । परन्तु दूसरे ही क्षण वह एक दम प्रसन्न हो गया । फिर हंसी और खुशी की मिलावट के स्वर में बोला—वसती आधुनिक होगई है । नियम दस्तूर और कायदे कानून आधुनिक हो गए हैं । इसके साथ साथ चित्रकार और चित्रकला दोनों आधुनिक हो गए हैं । तुम इस वृद्ध को किसी भी रूप में देख सकती हो, किसी भी दशा—आयु तथा संकेत का अनुभव कर सकती हो । यह वृद्ध एक बूढ़ा आदमी भी हो सकता है, एक बूढ़ा दरिया भी हो सकता हैं, एक बूढ़ा जहन भी हो सकता है. एक बूढ़ा वृक्ष भी हो सकता है, बूढ़ा मरुस्थल और उपजाऊ भूमि का बूढ़ा टुकड़ा भी हो सकता है । और तुम्हारा रूप भी । यह बूढ़ा बूढ़ी इमारत भी हो सकता है और बूढ़ी सड़क भी... .....। चित्रकार कहता जा रहा था । युवती क्षुब्ध होती जा रही थी । चित्रकार के कथन तथा चित्र के बूढ़े में कोई समानता, सामन्जस्य तथा समन्वय उसे कदापि अनुभव नहीं हो रहा था । उसने चित्रकार को रोक कर कहा —बस । मैं समझ गई । बिल्कुल समझ गई । अब और आगे पूछने की कोई बात नहीं । है । मुझे एक ही चित्र में समष्ठी का आकार दिखाई देने लगा है । यही बूढ़ा अब मुझे एक उड़ती हुई युवती, गिरती हुई आबशार, बहती हुई सड़क और रूका हुआ बवन्डर अनुभव होने लगा है ।

कहते हुए युवती अगले चित्र की ओर बढने लगी । साथ ही उसे लगा चित्रकार उसके साथ चलने लगा है । अगले चित्र पर रूक कर युवती चित्र में गुम हो गई । चित्रकार पास खड़ा युवती के नख-शिख देख-देख कर अल्हादित-आनन्दित तथा रोमांचित होता रहा । उसे आशा थी कि युवती चित्र के सम्बन्ध में अवश्य पूछेगी और वह अधिक उचित तथा शक्ति-शाली ढंग से चित्र के बारे में बता सकेगा । परन्तु वह क्षण जब काफी समय तक नहीं आए तो चित्रकार ने युवती की एकाग्रता तथा तन्मयता को भग करते हुए कहा —इस चित्र के बारे में तुम्हें कुच्छ नहीं पूछना ? युवती चौंक तो गई परन्तु साथ में सटपटा सी गई। अक्षण बोली—हां। एक बहुत मामूली परन्तु बड़ा प्रश्न तुम से पूछना है ।

—तो पूछो । शीघ्र पूछो । मैं चाहता हूं कि तुम मुझ से बहुत सारे प्रश्न पूछो और मैं तुम्हें उतर देता जाऊं । कभी थकूं नहीं ।

युवती कृत्रिम ढग से मुस्कराई और प्रश्न पूछा—तुम्हें इन चित्रों के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञान नहीं है, ऐसा क्यों है ? और साथ ही साथ तुम झूट क्यों बोल रहे हो ?

चित्रकार की आंखों कानों और हाथों पर ओस पड़ गई । क्या कहे । क्या न कहे ।

परन्तु कोई विधान कोई दस्तुर कोई नवीनता, आधुनिकता तथा प्रगति की कोई भी कैसा भी पडांव क्यों न हो, एक आदमी अपनी समझ बूझ पर हुए आक्षेप को सहन किसी सीमा तक कर पाता है । वह तो चित्रकार था । उबाल भी आ गया । और किनारे भी जलने लगे । बहुत गम्भीर और विचारात्मक मुद्रा में उसने

कहा—यदि तुम चित्र से अपनी रुचि हटा कर मुझे सुनो तो मैं कुछ उत्तर अवश्य देना चाहूंगा .

—सच ही युवती चित्र से दृष्टि तथा ध्यान हटा कर उसे देखने लगी—कहो ! मैं सुनना ही तो चाहती हूं !

—मैं जानता हूं कि जो कुच्छ मैं कहूंगा यदि मैं केवल तुम्हीं से कहूंगा तो भी वह सभी को मालूम हो जाएगा। एसा प्रयास करूं कि केवल तुम्हें ही बता सकूं । क्योंकि मेरी सारी मान्यता और ख्याति झूट पर टिकी हुई है। मैं आधुनिक बस्ती में आधुनिक दस्तूरों के नीचे, झूट जी रहा हूं, झूट पहन रहा हूं। झूट को ओढ़ बिछा रहा हूं। झूट कहसुन, और बोल रहा हूं। आमूल झूट ही रंग रहा हूं। चाहे में झूट रंगने पर किसी तौर बाध्य हूं याकि साकार करने को चित्र कहता हूं परन्तु यह भी एक सत्य है कि झूट की पराकाष्ठा देखने और उसकी व्यवस्था की चरम सीमा देखने केलिए झूट ही का दर्पण बना कर क्यों उसी को दिखाया जाए । मैंने स्वयं से, अपनी सृजनात्मक कृतियों और कल्पनाओं से विश्वास-घात भले ही किया हो परन्तु एक उपलब्धि का श्रेय मुझे ही मिलना चाहिए कि उस माध्यम से जिससे बसती और दस्तूर दोनों के विधानों का कलात्मक अनावरण होता हो, मैं ने ऐसे दर्पण अवश्य बनाए हैं । सूर्य रात के आगे इस लिए गिड़गिड़ाए कि उसके अस्तित्व को नकारा जा रहा है, और उसका हर पक्ष काली रात सा काला होता जा रहा है। मैं भी रंगों की भाग-दौड़, उथल-पुथल तथा समाधिस्थ अवस्था को जानता हूं। मेरा उत्तर यही है कि मैं बहुत विस्तार, विशालता तथा बहुगुण आत्मनिष्ठ हूं। और यह चित्र बसती के कुच्छ क्षणों का रेतीला इतिहास ।

कहते हुए चित्रकार को रूक जाना पड़ा । एक राक्षस आता दिखाई दिया। युवती बहुत प्रसन्नचित मुद्रा में बदल गई । और ताली पीटने लगी – यह चित्र तो इतना ही सच बोल रहा है जितना नई बसती की आधुनिकता का माध्यम, नया दस्तूर।

राक्षस के काले पत्थर जैसे होंटों पर हसी की रेखाएं खिच गई । वह कहे बिना नहीं रह सका—यह भवन सदियों तक बसती की शोभा का बखान करता रहेगा । और चित्रकार तो ब्रह्मा माना जाएगा।

अब वह तीन थे। युवती, चित्रकार और राक्षस । बारी बारी चित्र देख रहे थे। वह और मछली बहुत आगे थे और धुन्धले से दिखाई रहे थे।

एक चित्र ने तीनों के पांव बान्ध लिए । वृक्षों का एक झुन्ड दर्शाया गया था जिस पर रसदार फल दिखाने के स्थान पर स्वर्ण के फल लगे दिखाई दे रहे थे। राक्षस कुच्छ क्षणों तक देखता रहा । फिर उसने चित्रकार से पूछा—यह वृक्ष कहां लगे हुए हैं ?

चित्रकार मुस्कराया – बसती में ऐसे असंख्य वृक्ष लगाए जा चुके हैं। परन्तु अभी फलों वाली ऋतु आई नहीं । मैंने भविष्य की कल्पना कर बसती के वृक्षों का आगामी जीवन रंग दिया है । सभी देखेंगे कि जहां भी वृक्ष होगा उसपर सोने के फल उगे होंगे।

— इन्हें खाएगा कौन ? राक्षस ने विस्मय से पूछा।

—हम सब। मैं, तुम, यह युवती। और वे सभी जिन्होंने एसे वृक्षों के बारे में, सोचा, अनुसन्धान किया है।

वह तीनों आगे बढ़े। अगलाचित्र भी स्वयं में एक बड़ा चमत्कार

था। बहुत से लोग भाग रहे थे? भागते हुए लोगों की चार-चार टांगे दिखाई गई थीं। कुछ एक तो टांगों को कन्धों पर उठाए हुए थे। परन्तु चित्र का एक पहलू यह भी था कि भागने वाले सभी लोग अन्धे दिखाए गए थे।

चित्रकार देख कर आगे बढ़ गया। राक्षस का ध्यान आकर्षित करने के लिए उसने कहा – सौन्दर्य की रक्षा खड़ग तथा भाले, तीर-कमान और अस्त्रों-शस्त्रों वाला ही अधिक प्रभावी ढंग से कर सकता है।

चित्र में एक सुन्दरी थी। जिसके हाथों पांवों और पसलियों में उड़ने के पर देखाए गए थे। वह सुन्दरी निर्वस्त्र थी। और उसकी रक्षा कई एक राक्षस नंगी तलवारें और खुली आंखें लिए हुए कर रहे थे।

चित्रकार ने स्वयं ही बताया—यह प्रगति है जिसका हर अंग हमें दिखाई दे रहा है। वह आगे बढ़ रही है और उसके साथ-साथ उसके शूरवीर रक्षक भी बढ़ रहे हैं। प्रगति आगे बढ़े और उसकी निरन्तर रक्षा भी हो, यही तो बसती का नया दस्तूर है?

आगे एक रत्न जड़ित द्वार था जो शायद नाटक-गृह का चोर-दरवाजा था। राक्षस रूक गया और बोला—तुम लोग भीतर चलोगे?

—भींतर भी देखने योग्य बहुत कुच्छ होगा। युवती ने कहा।

—हां बहुत कुच्छ। ऐसा कुच्छ कि बसती का कोई आदमी कल्पना भी नहीं कर सकता।

—मैं बहुत घूमी हूं। थक गई हूं। फिर मुझे और भी बहुत कुच्छ करना है। युवती ने कहा।

—बहुत कुच्छ में क्या-क्या आता हैं? राक्षस ने हंसते हुए कहा?

—वह सब कुच्छ आता है जो एक निज़ामी परिन्दे के लिए आवश्यक होता है?

राक्षस चुप हो गया। चित्रकार वापिस चला गया। युवती आगे बढ़ गई और राक्षस द्वार के भीतर चला गया।

चार

—उल्टा उठो ।

वह हड़बड़ा कर उठ बैठा । सामने मछली उतावली सी मुद्रा में खड़ा था । उसके हाथ में कपड़े का टुकड़ा था ।

— चलो जलदी ! मैं अभी अभी मुनादी सुन कर आया हूं । हमें शीघ्र उस स्थान पर पहुंचना चहिए !

—कहां ? किस स्थान पर ? क्यों ? यह क्या कह रहे हो ?

—बाहिर आदमकद इश्तिहार लगे है । मुनादी की जा रही है। नई बसती के नए विधान-नियमों के अन्तर्गत बसती का हर वाशिन्दा अपनी अपनी शिकायतें जमा करवाएगा । मछली ने कहा ?

वह कुच्छ क्षणों तक निरन्तर मछली को देखता हुआ गद्दे में सोचता रहा । हां ना, कुच्छ भी उत्तर नहीं दिया ! और न ही अपने स्थान से हिला जुला । मछली ने एक बार फिर आग्रह किया तो वह विषाक्त सी हल्की हसी हंसा-- शिकायतें ! बस्ती में रहने वालों की शिकायतें भी हैं ?

मछली चिड़चिड़ा गया । अपने कदमों को वापिस मोड़ता हुआ

ऊंचे स्वर में बोला— शिकायतें हैं। दुःख —तकलीफें हैं। नए विधान में एक नियम यह भी हैं कि एसी व्यवस्था की जाए जिस से हर आदमी को अपने दुख और तकलीफों के बताने का अधिकार हो। और वह सब कुछ कह सके।

किससे कह सके ? उसके प्रश्न किया ! मछली हूं कह कर नाक ही में नुङ-नुङ कर के हंसा।

—तुम एक भावहीन प्राणी हो ! एक दम निर्बुद्धि। और फिर कुच्छ सोचना समझना चाहते भी नहीं हो। एसा आदमी अपराधी होता है। अपना भी और दूसरों का भी ! कहकर मछली कमरे से बाहिर निकल गया। आंगन में पहुंचा ही था कि उस ने पुकारा-तनिक ठहरो। मैं भी चल रहा हूं। इसलिए नहीं कि मुझे कुच्छ कहना अथवा प्रलाप करना है। मैं यह देखना चहता हूं कि तुम क्या क्या शिकायत करोगे ! क्या क्या दूख बताओगे !

वह बाहिर निकला तो मछली उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। आंगन में से गुजरते हुए उसने पूछा इस समय दिन है कि रात ?

—अपना अपना विचार है और अपनी अपनी अवश्यकता . चाहो तो दिन कह लो और चाहो तो रात समझ लो !

गली के बाद, सड़क पर आज कुच्छ लोगों की गति तीव्र हुई दिखाई देरही थी। सिरों, टांगों हाथ-पांव और आंखों की भाग दौड़ सामान्य से अधिक थी ! यहां - तहां कुच्छ टुकड़ियों में लोग खड़े बातें भी कर रहे थे !

उसे बहुत अजीब लगा। उसने मछली से कहा—नई बसती के आचरणानुसार बसती का हर बाशिन्दा एक दूसरे के लिए अजनबी

है। परन्तु आज बहुत सारे लोग आपस में वार्तालाप कर रहे हैं ?

—एक दूसरे को अपनी अपनी शिकायतें सुना रहे हैं । सोचते होंगे, कुच्छ शिकायतें सांझी निकल आएं ।

वे दोनों टुकड़ियों के समीप से गुज़रते गए। परन्तु कहीं रुकने का साहस उन्हें नहीं हुआ। एक बहुत बड़ी चमचमाती दुकान पर एक साईन बोर्ड देखकर दोनों रूक गए। लिखा था अपनी शिकायते लिखवाइये। मछली ने कुहनी ठोकी - यही वह जगह है जहां सब कुच्छ लिखवाया जाएगा। आओ कुच्छ लिखवा दें।

— तुम चलो। मैं साथ हूं। यदि लिखवाना ही पड़ा तो जो तुम लिखवाओगे, मैं भी लिखवा दूंगा।

दोनों दुकान में घुसे। परन्तु उन्हें आश्चर्य हुआ कि दुकान में कोई भीड़ नहीं थी । एक आध स्त्री नुमा पुरुष, और पुरुष नुमा स्त्रियां और कुच्छ दर्म्यानी जात के लोग धीरे धीरे कुच्छ लिखवा रहे थे। एक बेकार आदमी के काऊंटर पर जाकर मछली ने कहा -हम भी शिकायतें लिखवाने आए हैं।

—हां। ज़रूर लिखवाइये। कह कर उसने एक घड़ा नुमा दवात और वृक्ष नुमा कलम निकाल लिया। अपने आगे एक बड़ा सा कागज़ बिछाया और बोला —हां तो लिखवाइये क्या लिखवाना है।

मछलीं कुच्छ कहने को था कि उसने उसे रूकने का संकेत किया। मछली ने धीरे से पूछा :

—क्या है ? क्या चाहते हो ?

—मेरे विचार में यह वह स्थान नहीं है ।

—कौन सा स्थान ? मछली ने पूछा ।

—वही । जहां सभी लोग अपनी शिकायतें, दुख, पीड़ाए और यातनाएं जमा करवाए गे । उसने इधर-उधर देखकर कहा ।

—तुम कैसे जानते हो ? मछली ने पूछा ।

—यहां केवल लिखा जा रहा है । यह लोग उनके लिये लिख रहे हैं जो लिखना नहीं जानते हैं ।

मछली एक-आध क्षण दुविधा में रहा फिर उसने काऊंटर वाले से पूछा—

—आप मेरी शिकायतें लिखकर जमा कर लेंगे ।

—नहीं । हम केवल आपको लिख कर देंगे । जमा होने वाला स्थान तो अभी निश्चित नहीं है । उसके लिए शीघ्र ही इश्तिहार लगेंगे और मुनादी होगी ।

मछलीं ने कृतज्ञ आंखों से उसकी ओर देखा । फिर काऊंटर वाले से पूछा—

—आम शिकायतें लिखने का क्या लेते हैं ?

—कुच्छ खास नहीं । अन्तड़ी का छोटा-मोटा टुकड़ा । काऊंटर वाले ने कहा । मछली को विस्मय हुआ । पूछा - अन्तड़ी का ? कैसे ? काट कर अथवा और किसी तरीके से ?

—काट कर । परन्तु तुरन्त नहीं । धीरे-धीरे काटते हैं । अन्तड़ी कट भी जाती है और आदमी को पता भी नहीं चलता ?

—दर्द बिल्कुल नहीं होता ? अब मछली ने जब पागलों सा

प्रश्न किया तो उससे न रहा गया । उसने कहा—भाई मछली ! अन्तड़ी काटने के कितने ही तरीके निकाले जा चुके हैं । गत कई वर्षों से यही अन्वेषण और अनुसन्धान चलते आ रहे हैं । कहते हुए वह अक्षण ही चुप हो गेया। उसने देखा, काऊंटर वाला आदमी उसे दृष्टि गड़ाए देख रहा था । और उसके होंट कुच्छ पूछने के लिए हिले । रहे थे । तुरन्त ही उसने समय को सम्भालते हुए मछली से कहा—मछली । हम तो स्वयं लिख लेते है, लिखवाने की क्या आवश्यकता है, अब चलो।

दोनो दुकान से बाहिर निकलने लगे तो पीछे से स्वर सुनाई दिया :

—कुछ लोग स्वयं लिखने में समर्थ हैं परन्तु हो सकता है उनका लिखा हुआ कहीं भी जमा न हो सके।



पांच

—यह देखो। यहां ! यहां क्या लिखा है । मछली ने उसको घसीटते हुए कहा । दोनों पढ़ने लगे । पढ़ने में कुच्छ कठिनाई आने लगी। अक्षर बहुत बड़े बड़े ये और दूरी ही से पढ़े जा सकते थे। दोनों कुच्छ दूरी पर चले गए और पढ़ने लगे । आदम कद अक्षरों में लिखा था - चिन्ता छोड़िये । अपनी शिकायतें, दुख तकलीफें लिखते जाइये ।

—भाई उल्टा। यहां यह लिखने का क्या अर्थ हुआ ? मछलीं ने पूछा।

—लिखने वाले को किसी आने वाले संकट की पूर्व सूचना मिल चुकी है। यही अर्थ हुआ।

तब बसती मैं घूमने पर दोनो ने देखा बहुत सारे स्थानों पर इसी प्रकार का वहुत कुच्छ लिखा जा चुका था। और लोग पढ़ने में व्यस्त थे । बड़े चौराहों में यही अक्षर बहुत बड़े बड़े इश्तिहारों पर लिखे हुए थे। और पढ़ते हुए लोग बहुत प्रसन्न चित्त दिखाई दे रहे थे। और उन इश्तिहारों के बारे में वार्तालाय भी कर रहे थे ।

बसती क्या थी। इसी बात का सही अनुमान लगाना कठिन

हो गया था। और अधिक कठिन होता जा रहा था। बसती में लोग थे, आदमी थे, औरतें थी ! दुकानें थीं। घर थे। सड़कें और गलियां थीं ! हवा और पानी थे ! परन्तु कहीं भी इन सब का आपस में सम्बन्ध देख पाना अथवा अनुभव कर लेना एक कठिन कार्य था। कुच्छ होते हुए कभी-कभी यह सोचने पर विवश हो जाना पड़ता था कि यह सब कुच्छ कहां है ! मर्द औरतें, दुकानें मकान सड़कें गलियां हवा पानी और बसती को चलाने वाले सभी तत्व तथा पदार्थ कहां हैं ? यदि यह सब कुच्छ बसती में ही होता तो इस सब की चर्चा होती। परन्तु चर्चा तो थी नई बसती के नए विधान, नए नियमों, नई आस्थाओं, नई मान्यताओं और नए मूल्यों से ओतप्रोत आधुनिकता के नए चेहरों की।

आधुनिकता चाहिए थी ! नए विधान कानून नियम मूल्य-मान्यताएं सभी कुच्छ चाहिए था, परन्तु किसके लिए ? उत्तर था बसती के लिए। फिर बसती कहां थी ! वहां तो अजनबीयत थी, अपना-अपना दिन अपनी-अपनी रात थी। अपने-अपने धन्धों और पेशों के तौक सब ने गले में लटका रखे थे !

बसती में वर्ग भी थे ! परन्तु कहीं भी नज़र नहीं आ रहे थे ! जो ऊंचे वर्ग के जीव थे वह सब कुच्छ होते हुए बहुत खुश थे ! दूसरे वर्ग के लोग जो न तो गले में तौक डाल सकते थे, न ही नाखुन बढ़ा सकते थे, न ही फैन्सी ड्रैस मुकाबलों वाले बस्त्र पहन सकते थे और न ही चमकीली और कड़क-भड़क वाली बड़ी सड़कों पर खुले-चल फिर सकते थे, ऐसा लगता था बसती में से भाग चुके थे और जाते-जाते अपना अन्तिम चिन्ह तक मिटाते गए थे ?

उसकी अपनी एक कल्पना थी। बसती के सम्बन्ध में। लोगों

और मान्यताओं के सम्बन्ध में । पुरातन और आधुनिक नियमों आस्थाओं और मान्यताओं के सम्बन्ध में । परन्तु बसती में नए आए आधुनिक परिवर्तन ने उसे भी दुविधा में डाल दिया था । और धीरे धीरे वह स्वयं को मानसिक तौर पर पङ्गु तथा अपाहज अनुभव करने लगा था ।

एक प्रश्न बार-बार उसके दिमाग में कौन्दता था कि सब कुच्छ कहां है ? और जो कुच्छ है वह है भी या नहीं । उसे विश्वास नहीं होता था कि जो कुच्छ है, अथवा दिखाई देता है, वह सब कुच्छ वास्तव में है । जो कुच्छ पहले था वह कहां किसके पास था । फिर वह कहां से कहां किसके पास चला गया और अब वह सब कुच्छ किसके पास है ।

बसती के सारे लोगों ने शिकायतें लिखीं । और बहुत दिनों तक उनकी शिकायतें उन्हीं के पास सुरक्षित रहीं । परन्तु आधुनिकता के साथ-साथ बसती वालों में इतनी जागृति तथा समझ आ गई थी कि एक आदमी को दूसरे आदमी की किसी भी शिकायत, दुख-पीड़ा तथा भावना का ज्ञान नहीं हो सका । सभी अपने अपने तौर पर अपना पीड़ा पत्र गुप्त रख रहे थे । याकि वह पत्र ही एक ऐसा यन्त्र था जिसके खुलते और सुनाते ही दुख और पीड़ा के किले मसमार हो जाएंगे ।

—बसती के बाशिन्दो । आपको यह सुनकर खुशी होगी कि बसती के सौन्दर्य में एक पांचवां चांद लग गया है । उस पांचवे चांद का नाम है पारदर्शी मंच । जिसे बसती के प्रसिद्ध कलाकारों ने सजाया है । अब वह पारदर्शी मंच निर्मित हो चुका है । और केवल बाहिर से देखा जा सकता है । हर आदमी, औरत और दर्मियानी

ज़ात के आदमी को बिना भेद-भाव देखने का अधिकार दिया जाता है।

यह मुनादी का, नई मुनादी का विषय था। तीन-चार बैल-गाड़ियों को जोड़ कर एक लम्बा मंच बनाया गया था जिसे अर्ध-नग्न नारियों की पंक्ति खेंच रही थी। मच पर कुच्छ दर्मियानी ज़ात के लोग आकर्षक-मोहक मुद्राओं में बुतों की भान्ति खड़े थे। और दो चार निज़ामी परिन्दे उनके ईर्द गिर्द चक्कर काटते हुए चिल्ला रहे थे।

मुनादी वाले जहां से गुज़रते थे, लोगों की भीड़ एकत्रित हो जाती थी। कुच्छ लोग तो निरन्तर उनके साथ पारदर्शी मुनादी मच-यात्रा कर रहे थे।

बसती में एक परम्परा थी कि हर कार्य के लिए हर आदमी को अकेले-अकेले तैयार होना पड़ता था। इस परम्परा का लाभ बसती को यह था कि कहीं भी, कभी भी अधिक भीड़ एकत्रित नहीं होती थी। यहां तक कि बसती के लोग आवागमन के चक्र से स्वतन्त्र नहीं थे, परन्तु मृत्यु तथा जन्म के अवसरों पर भी बहुत कम लोग दिखाई देते थे।

अकेला अकेला आदमी पारदर्शी मंच देखने के लिए तैयारी करने लगा।

मछली काफी देर तक उसके साथ माथा पीटता रहा। कहता रहा कि जब मंच देखा था तब अपूर्ण था। अब पूर्ण रूप से निर्मित हो चुका है, हमें एक बार जाकर फिर देखना चाहिए। परन्तु वह बराबर इनकार करता रहा। अन्त में मछली ने क्षुब्ध होकर कहा—

तुम पागल हो। उल्टे आदमी हो। बसती में रह कर बसती की किसी भी चीज़ से, निर्माण से, आधुनिकता तथा नियम से सहमत नहीं हो। तुम्हें बसती में रहने का कोई अधिकार नहीं है। मैं बसती में रहता हूं। यहां का सभी कुच्छ मुझ से सम्बन्धित हैं। कह कर मछली क्रोध में भरा हुआ पारदर्शी मंच देखने चला गया।

वहां पहुंच कर मछली को अधिक आश्चर्य हुआ। देखा कि लोगों का अपार समुद्र पारदर्शी मंच देखने पहुंच गया था। और एक एक वस्तु तथा तथ्य को एक-एक आदमी दत्त-चित्त और तन्मयता से देख रहा था।

इश्तिहारों की परम्परा वहां भी जारी थी। छोटे बड़े सभी आकार के सुन्दरतम इश्तिहार वहां लगाए गए थे। वैसे बसती वालों का इश्तिहारों में सदैव ही से विश्वास था। इतना अवश्य था कि इश्तिहार का आकार और मुंह देखकर उसे महत्व देते थे। छोटी बात, छोटा इश्तिहार और छोटा महत्व। बड़ी बात, बड़ा इश्तिहार और बड़ा महत्व। जब कभी ऐसा होता था कि बहुत बड़ी बात छोटे इश्तिहार पर लिख दी जाती तो कोई विश्वास न करता। और यदि बहुत छोटी बात बहुत बड़े इश्तिहार पर लिखदी जाती तो लोग थोड़ा बहुत प्रभाव ले लेते, बिश्वास कर लेते।

मछली के लिए और भी बहुत कुच्छ नया था। परन्तु इश्तिहार उनके आकार, उनपर लिखित अक्षर शब्द उसके लिए विस्मय तथा सन्तोषदायक थे।

पारदर्शी मंच के चारों ओर शीशे की दीवार के बाहिर बड़े आकार के गोलाकार में बड़े-बड़े वृक्ष उग आए थे। उन पर हरे

भरे पत्ते लदे थे और फूलों के रंगों को देख कर स्वयं को भूल जाना पड़ता था।

मछली को सशय हो रहा था कि जब वह और उल्टा और एक सुन्दर युवती इधर को आ निकले थे तो उस समय यहां वृक्षों का निशान तक नहीं था। इतने थोड़ समय में अनगिनत वृक्ष कैसे उग आए ? फूल भी कैसे खिल गए ? वह जिस वृक्ष पौदे और झाड़ के समीप से गुज़रता, उसकी कामना होती कि वह तने को छू ले। एक पत्ता ही तोड़ कर देखे। एक फूल को हाथ लगा सके। परन्तु एक तो लोगों के रेवड़ और दूसरे छोटे बड़े इश्तिहार। इश्तिहार पर लिखा मिलता आधुनिक वृक्षों के लिए अवधि अनिवार्य नहीं। उग आते हैं। कहीं लिखा होता – हाथ लगाने से पूरा वृक्ष मुर्झा जाएगा। केवल देखने की अनुमति। किसी वृक्ष पर यह अक्षर मिलते यह चमत्कार नहीं यथार्थ है। ऐसे बीजों की कमी नहीं है जो ऐसे वृक्ष पैदा कर सकते हैं जो सदैव हरे-भरे रहें। जैसे जैसे मछली वृक्षों-पौदों को देखता गया उसका संशय बढ़ने लगा। वह तीव्रता से चाहने लगा कि वह पत्ता तोड़े। तनों को छू कर देखे।

मछली घूमता रहा और अवसर ढून्डता रहा कि भीड़ कम हो और वह अपना मनोरथ पूरा कर सके। जब बहुत कम लोग रह गए तो उसने देखा कि दो चार निज़ामी परिन्दे उसका पीछा कर रहे हैं। उसने सोचा क्यों न किसी निज़ामी परिन्दे ही से अपनी शंका का निवारण करवा लिया जाए। झट ही उसने समीप से कतरा कर गुजरते हुए आदमी को कहा – मेरा नाम मछली है। मैं लोगों की आंखों में मछलियां जड़ता हूं। कुच्छ ही दिनों में मेरी उन्नति होने वाली है और मैं निज़ामी परिन्दा बनने वाला हूं।

रूकने वाले आदमी ने उसका हंस कर अभिवादन किया और कहा-कुच्छ पूछना चाहते हो ?

—हां। पूछना चाहता हूं। यह वृक्ष कभी नहीं सूखेंगे ?

—नहीं सूखेंगे। यह आधुनिक वृक्ष हैं। आधुनिक बस्ती के आधुनिक वैज्ञानिकों का आधुनिक चमत्कार। और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि यह वृक्ष इतने ही बड़े पैदा हुए हैं।

मछली मामूली सा चकरा गया। उसने दुविधा में फंसे हुए पूछा— अब आधुनिक बसती में हर चीज़ बड़ी ही पैदा होगी ?

—हां। बड़ी ही पैदा होगी। पालने में समय और सम्पत्ति दोनों नष्ट होते हैं। निज़ामी परिन्दे ने कहा।

—परन्तु मैं तो बहुत धीरे धीरे बड़ा हुआ हूं। मेरा पहले जन्म हुआ। फिर मुझे पाला गया और अब जाकर बत्तीस-तेतीस वर्ष के पश्चात इतना बड़ा हो सका हूं।

निजामी परिन्दे ने सुना तो हंसा —

—तुम्हें तुम्हारे सम्बन्ध में गलत सूचना दी गई है। यथार्थ यह है कि तुम बड़े ही पैदा हुए थे। तुम्हें केवल अनुभव होता रहा कि तुम्हें पाला जा रहा है। और तुम बड़े होते जा रहे हो।

मछली ने धन्यवाद किया। निज़ामी परिन्दा चला गया। मछली ने इधर उधर देखा दूर तक कोई नहीं था। वह आगे बढ़ा और एक डाली को पकड़कर पत्ता तोड़ने लगा कि स्वर सुनाई दिया— मत तोड़ो।

वह कांप गया। देखा। उल्टा खड़ा था। जान मे जान आई।

कहा –तुमने तो डरा ही दिया।

—किस लिए तोड़ना चाहते हो। यह डाली न ही झुक सकती है और न ही पत्ते तोड़े जा सकते हैं।

--क्यों नहीं तोड़े जा सकते ? मछली ने पूछा।

—इस लिए कि यह सब कुच्छ धातु का बनाया गया है। बहुत जटिल धातु का। रंग चढ़ा दिया गया है। रंग ही धोका दे रहा है। मैं तो यह कहूंगा सब जानबूझ कर धोका खा रहे हैं। जानते हुए, समझते हुए।

अब वह दोनों वहां थे जहां शीशे की दीवारें थी और भीतर जाने के लिए कुच्छ अन्तराल पर फाटक लगे हुए थे और फाटकों पर राक्षस खड़े थे। परन्तु फाटक हर आदमी के लिए खुले थे। लोग अब भी आ जा रहे थे।

भीतर प्रवेश करते समय मछली सोच रहा था कि भीतर नया क्या क्या होगा और वह सोच रहा था कि वह देखेगा, बसती के लोगों को सुविधा और आधुनिकता देने के लिए कौन कौन से नए रंग और रेखाओं-आकारों का निर्माण किया गया है।

फाटक में से गुजरते हुए मछली की दृष्टि राक्षस से भिड़ी तो राक्षस तनिक मुस्कराया और उसके समीप आ गया।

—तब और अब में धर्ती-आकाश का अन्तर है। पहले जब तुम दोनों आए थे, उस समय मात्र शुरूआत थी : अब तो सोच को दंग करने वाली बातें हो गई हैं।

फाटक के सामने कुच्छ कदमों पर फव्वारा चल रहा था उसका

पानी हर क्षण रंग बदल रहा था । मछकी को बहुत भला लगा। फव्वारे की बौछार को हाथ पर लेने के लिए उसने हथेली आगे को बढ़ाई परन्तु नमी का अनुभव नहीं हुआ । उसने और आगे हाथ बढ़ाया परन्तु शायद पानी था ही नहीं । उसने पलट कर कहा— उल्टे ! यह पानी नहीं है आश्चर्य !

—देख रहा हूं और पहली बार महसूस कर रहा हूं कि धोका खा गया हूं। दृष्टि के साथ-साथ दिमाग भी गुमराह हो गया है । मैं भी इसे पानी का फव्वारा समझ रहा था।

उन चित्रों के साथ बहुत सारे और चित्र जुड़ गए थे जो उन्होंने पहले देखे थे । फिर अब मंच की बाहिरी गोलाई में कुच्छ मूर्तियां भी स्थापित की गईं थी। कुच्छ मूर्तियां कांच की थीं और कुच्छ पत्थर की।

मछली मूर्तियों की चकाचौंध और सुन्दरता में फंसा था । वह मूर्तियों के घड़ाव और आकारों से दुविधा में फंसता जा रहा था । फिर भी सभी मूर्तियां दोनों के लिए अजूबा थी और दोनों देख रहे थे। मछली के वाह कहने पर वह कभी-कभार उसकी हां में हां मिला देता। एक मूर्ति मछली की दृष्टि में ऐसी फंसी कि वह उसे कहे बिना न रह सका—

—उल्टा। यह मूर्ति है तो बहुत मोहक परन्तु यह है क्या ? क्या-क्या दर्शाया गया है ?

—यह प्रगति की मूर्ति है । उसने बहुत धीरे से कहा।

—तुम्हें कैसे मालूम ? मछली ने पूछा तो वह हंस पड़ा—मछली। प्रगति का कोई मुंह-माथा नहीं होता इस मूर्ति का भी नहीं है ।

प्रगति भागती है परन्तु उसकी टांगे और पांव दिखाई नहीं देते। इस मूर्ति के भी टांगें और पांव नहीं हैं। प्रगति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। और संघर्ष के लिए आदमी अपने पेट तक की परवाह नहीं करता। इस कारण इसका पेट भी नहीं है। प्रगति आन्धी तूफान, सर्दी-गर्मी धूप-छांव कुच्छ नहीं देखती। प्रगति अन्धी होती है। इस लिए इस मूर्ति की आंखें भी नहीं हैं।

बात सुन कर मछली इस तौर हंसा कि उसे कोई दौरा पड़ गया हो। हंसते-हंसते कहने लगा—उल्टा। तुम मुझे हमेशा उल्टे दिखाई देते हो। परन्तु वास्तव में हो नहीं। मुझे अपनी मलेच्छ बुद्धि पर तरस आ रहा है और अपने जीवित रहने पर पश्चाताप हो रहा है। भला जिसकी आंखें नहीं, जिसका पेट नहीं, जिसके नखशिख, टांगे पांव और बाजू नहीं वह मूर्ति कैसी हुई और वह मूर्ति प्रगति की कैसे हुई? कहते हुए मछली, अन्तिम शब्द धीरे से कह कर खामोश हो गया। दो व्यक्ति, जो आकृति ही से निज़ामी परिन्दे दिखाई देते थे और जिन के हाथों में घड़याल और घड़ी के आदम कद बाजू थे आकर उनके पास खड़े हो गए। मछली ने चहक कर कहा—कितनी सुन्दर मूर्ति है।

—हां! प्रगति इतनी ही सुन्दर होती है। वह भी आधुनिक प्रगति। उसने कहा।

—तुम्हें कैसे मालूम कि यह मूर्ति आधुनिक प्रगति की है। एक घड़याल वाले निज़ामी परिन्दे ने पूछा।

—मैं आंखें खोल कर और मूर्ति में आंखे गाड़ कर मूर्ति को देख रहा हूं। नीचे इतने बड़े-बड़े अक्षरों में खुदा जो हुआ है "आधुनिक प्रगति।"

वे दोनों मूर्ति के चारों ओर दो तीन बार घूमे परन्तु उन्होंने अक्षर कहीं नहीं पाए। दोनों ने फिर एक साथ कहा—भाई। कमाल है हमें तो यह लिखा हुआ कहीं नहीं मिल रहा।

—तुम दोनों मूर्ति को देख तो रहे हो परन्तु दिमाग में कुच्छ और घूम रहा है। दृष्टि के साथ-साथ दिमाग को भी घुमाओ तो लिखा हुआ मिल जाएगा।

वे दोनों दृष्टि के साथ दिमाग जोड़ कर मूर्ति को देखने का यत्न करने लगे। मछली और वह आगे बढ़ गए।

आगे रत्न जड़ित द्वार था। मछली और वह उस बन्द द्वार के आगे तनिक रुके। मछली ने कहा क्या ही अच्छा होता, हम भीतर जाकर भी देख सकते।

—मछली जिन द्वारों की साज-सज्जा अधिक होती है उनके भीतर बहुत कुच्छ दुखदाई और दुखान्त होता है। कह नहीं सकता इस द्वार के भीतर क्या है। परन्तु जब हमें किसी इश्तिहार अथवा मुनादी द्वारा भीतर प्रवेश का अधिकार मिलेगा तो मैं तुम्हारे साथ भीतर देखने के लिए अवश्य आऊंगा। अवश्य आऊंगा।

———

छः

आधुनिक बसती के आधुनिक बाशिन्दों की शिकायतें भी आधुनिक थीं । जब बहुत दिनों तक लिखित शिकायतें तथा यातनाओं को जमा करवाने के स्थान की मुनादी नहीं हुई और इश्तिहार नहीं लगे तो बसती में एक हलचल दृष्टिगोचर होने लगी । एक जाने-माने बुद्धिजीवी ने जो बसती के लिए आइने बनाने का पावन धन्धा करता था और प्रख्याति प्राप्त कर चुका था अपने घर के द्वार पर एक इश्तिहार लगाया । दो-चार व्यक्तियों ने पढ़ा । फिर आस-पड़ौस वालों ने देखा । फिर यूं हुआ कि लोग टोलियां बना कर उसके द्वार पर इश्तिहार पढ़ने आने लगे । इश्तिहार में उस आईना-निर्माता ने कुच्छ इस प्रकार की शिकायतें लिखी थी ।

१. मुझे लोगों से शिकायत है कि वह आईने में अपनी किसी भी तरह की दिखाई देने वाली शक्ल देख कर मुझे क्यों भूल जाते हैं ?

२. हर आदमी आईना देखना चाहता है मुझे क्यों नहीं ?

३. क्या नईं बसती की आधुनिकता तब तक पूर्ण कही जा सकती है, जब तक ऐसे आइने निर्माण न हों जिनमें देखते ही आदमी

चुप हो जाए और आइनां बोलने लगे ?

४. क्या बसती में आइनानुभा सड़कें नहीं होनी चाहिएँ ?

५. क्या बसती के आईनों के घर नहीं होने चाहिएं ?

६. क्या बसती की औरतों के स्थान पर आइनें नहीं होने चाहिएं ?

७. क्या बसती में हर वस्तु के स्थान पर आईने ही आइने नहीं होने चाहिए आदि ।

जब सारी बसती के लोग उसके द्वार की तीर्थयात्रा कर चुके तो हर आदमी ने अपने द्वार पर अपना-अपना शिकायतनामा लगा दिया। और हर आदमी खुश हो गया कि उसने अपने ही द्वार पर अपना शिकायनामा लगा दिया है।

मछली जब अपना शिकायतनामा अपने द्वार पर लगा कर स्वयं पढ़ने लगा तो असमंजस में पड़ गया । स्वयं से उसने ढ़ेर सारे प्रश्न पूछ डाले । उन प्रश्नों में कुच्छ प्रश्न तो एक दम बहुत अजनवी थे। वह पूछ रहा था क्या जो कुच्छ मैं सोच रहा था वही कुच्छ लिखा गया है ? क्या वही कुच्छ लिखा गया है जो कुच्छ मैं सोच रहा था ? क्या मुझे कभी यह शिकायत रही है कि बसती क्या है ? मैं क्या हूं ? आधुनिकता क्या है ? मंच क्या है। उल्टा क्या है और उल्टे से उलट क्या है।

और जब मछली उसके द्वार पर पहुंचा तो द्वार खाली पाकर बहुत निराश हुआ। उसके घर में दाखिल हुआ तो वह सोच की मुद्रा में गुमसुम बैठा था। मछली को कुच्छ समय तक उसने अनदेखा किया फिर स्वयं ही पूछा :—

– तुमने भी अपना शिकायतनामा अपने द्वार पर लगा लिया होगा।

—हां लगा दिया। परन्तु मुझे लगा कि वह सब शिकायतें मेरी नहीं हैं।

– तुम्हारी नहीं है? क्या अभिप्राय।

—मुझे लगा कि मैं ने शिकायेतें तराशी है। व्यर्थ शिकायतों का आविष्कार किया है। मछली ने उदासीन भाव में कहा।

—मैं भी दुविधा में हूं। एक ही शिकायत लिखना चाहता हूं परन्तु निर्णय नहीं कर पा रहा हूं कि लिखूं या नहीं। उसने कहा। मछलीं ने झट से बात के साथ बात जोड़ी—लोगों ने तो ढ़ेर सारी शिकायतें लिखी हैं। किसी किसी द्वार पर लिखे शिकायतनामें को पढ़ने में दो दिन तक लग सकते हैं।

– आधुनिक बसती में यही हुआ है। इतना हो सका है कि जो कहीं नहीं है उसे भीं शिकायत का रूप देदो। उसने कहा।

—उल्टा। तुम क्या शिकायत लिखने की सोच रहे हो? मछली को उसका ध्यान अक्समात ही आ गया।

—एक ही शिकायत। वह लोग कहां हैं जिन्होंने शिकायतें जमा करवाने को कहा था। यदि वह हैं तो सुनी क्यों नहीं। यदि नहीं हैं तो वह अपराधी कौन है जो सारी बसती के लिए गलतमुनादी और इश्तिहारबाज़ी करता है?

कुच्छ क्षणों की चुप्पी के पश्चात वह झट से उठ खड़ा हुआ और मछली से कहा:

--चलो। मेरे साथ चलो।

—कहां चलेंगे ? मछली ने पूछा।

—मछली। आदमी में आकांक्षा होना स्वाभाविक गुण है। लेकिन अपने अन्तर में केवल प्रश्न ही प्रश्न भर लेने से सभी कुच्छ एक बड़े प्रश्न ही में बदल जाएगा। फिर जीवन भर किसी भी बात का समाधान नहीं मिल सकेगा। मुझे बहुत बार लगा है कि तुम्हारे पास प्रश्न बहुत अधिक हैं और आकांक्षा कम।

बसती का वह भाग जहां वह पहुंचे मछली का देखा सुना हुआ था अभी तक वह असमंजस में था कि उल्टा उसे वहां क्यों लाया हैं। उधर टूटी-फूटी घायल और आतुर सड़क पर चलते हुए जीर्ण-जीर्ण गलियों में से गुज़रते हुए वह सोच रहा था कि मछली क्या अनुभव करता है। काफी घूमने के बाद मछली ने उससे कहा –उल्टा। एक बात नई देखी है। यहां किसी ने भी अपने द्वार पर शिकायतनामा नहीं लिखा है। लगता है यहां बसने वालों को कोई दुख, पीड़ा यातना और कोई संकट नहीं है।

वह केवल हंस दिय। चाहा कि मछली को कुच्छ कहे परन्तु उसने प्रायः अनुभव किया था कि जब भी उसने बहुत कुच्छ कहना चाहा तभी वह कुच्छ न कह सका।

दो क़दम बढ़कर उसने एक द्वार खट-खटाया। द्वार खुला। औरत-मर्द की जोड़ी खड़ी दिखाई दी। उसने मछली से कहा इनसे पूछलो, इन्होंने द्वार पर शिकायतनामा क्यों नहीं लगाया।

मछली के पूछने के पूर्व ही मर्द ने कहा–मैं लिखना जानता नहीं हूं। लिखवाने के लिए मेरे पास अन्तड़ी का छोटा-बड़ा कोई

टुकड़ा नहीं है। और शायद अब शिकायत भी कोई नहीं है। हां ! कभी-कभी खुद कोही पूछता हूं नंगे कब ढकेंगे और ढके हुए कब नंगे होंगे।

मछली को एक झटका लगा। उसका मस्तिष्क अपने स्थान से खिसका। सोचने लगा क्या कहा है उस मर्द ने ! उसने सारी बसती घूमी है। हर द्वार पर लगा शिकायत नामा पढ़ा है। पर कहीं भी ऐसी शिकायत पढ़ने को नहीं मिली :

—क्या सोच रहे हो ? उसने पूछा।

—यही। इस मर्द की बात ! ऐसी शिकायत तो कहीं नहीं पढ़ी।

—अब दोचार—द्वार और खटखटाएंगे और तुम्हें अनुभव होगा कि ऐसी शिकायतें बसती मे विद्यमान हैं जिन्हें कभी भी पूछा नहीं गया। ऐसी शिकायतें जन्म लेती हैं और सहक सहक कर मर जाती हैं।

आगे का द्वार खटखटाने पर द्वार खुला नहीं। भीतर से चीखने-चिल्लाने की ऊंची आवाज़ें आ रही थीं। वह दोनों दरार में से देखने लगे। एक नंगी औरत बड़ा सा कटा जूता चबाने के लिए मुंह में डालना चाहती थीं और नंगा मर्द उससे जूता छीनने के लिए संघर्ष कर रहा। मर्द कह रहा था—मुझे विश्वास हो चला है कि मेरा एक जूता भी तुम्हीं ने खाया है अब एक तो बचा रहने दो। उधर औरत कह रही भी—तुम्हरे पास जूता कभी था ही नहीं तुम झूट बोलते हो। यह जूता मैं बाहिर से लाई हूं खाने के लिए ?

मर्द हंस कर कह रहा था—तुम तो नंगी हो। बाहिर कैसे जा सकती थी।

—मैं रात के अन्धेरे में गई थी। मुझे किसी ने भी नहीं देखा। सारी बसती घूमी। कहीं भी जूता नहीं मिला। शायद हमारे पास पड़ोस में किसी के पास जूता नहीं है।

—उल्टा। यह औरत जूता क्यों खाना चाहती हैं। मछली ने विस्मय से आखें पूरे तौर पर खोलकर कहा।

—आदमी को जब खाने के लिए कुच्छ नहीं मिलता तो वह जूते खाने लगता है। जूता जानवर के शरीर का अंश ही तो होता है।

दोनों ने दो चार द्वार और खटखटाए। मछली परेशान हो गया। सुनने के साथ-साथ वह अपने में एक विषमता के सचार का अनुभव करने लगा।

—बसती में सब कुच्छ बदल कर आधुनिक हो गया है परन्तु यह हवा कब बदलेगी जो हर पल शरीर में छेद करती है?

—बसती के नए विधान कानून नियम और मर्यादा ने एक दूसरे को अजनबी घोषित कर दिया है परन्तु फिर भी एक ही स्थान, भूमि और इकट्ठे रहने पर हम लोग क्यों बाध्य है। हमें सात-सात कोस पर रहने का अधिकार क्यों नहीं दिया जाता?

—सूर्य निकलते ही हाथ में दिया लेकर चलो और रात होते ही बुझा दो। यह प्रथा बताते हुए उन लोगों का ध्यान क्यों नहीं रखा गया जिनकी तरफ सूर्य आता नहीं और दिये जिनके पास नहीं हैं?

—फैन्सी ड्रैस प्रतियोगिता में सिर से पांव तक नगे रहने वाले बाशिन्दों के भाग लेने पर पाबन्दी क्यों है?

उस बसती से बहुत दूर निकल कर भी मछली के मस्तिष्क पटल पर यही बातें उभर रही थीं। उसने लाख चाहा कि मस्तिष्क में

उड़ते हुए इन अक्षरों के भयानक परिन्दों को अन्तर से निकाल सके परन्तु वह ऐसा नहीं कर सका । वह उसके साथ चुप्पी साधे चलता रहा ।

अपनी बसती के समीप पहुंचते ही दोनों ने देखा, बड़े चौराहे पर बहुत से लोग एकत्रित हैं । वहां शायद किसी सभा - गोष्ठी का आयोजन होने जा रहा था ।

वह आगे था और मछली अब उसके पीछे घिसट सा रहा था । उसने रूक कर मछली से कहा —तुम चाहो तो चौराहे में रूक सकते हो । मैं जाना चाहता हूं ।

—मैं रूकूंगा । मैं चाहता हूं कि तुम भी रूको ओर देखो, यहां क्या होने वाला है ।

मछली के दो चार बार कहने पर जब वह नहीं रुका और चला गया तो मछली अनमना सा होकर चौराहे में आकर रुकते हुए भान्ति-भान्ति के व्यक्तियों को देखने लगा । अकस्मात् ही उसकी दृष्टि युवती पर जा टिकी । वह तेज़-तेज़ चल कर उसके समीप पहुंचा । युवती बहुत खुश लग रही थी । उसने आखें मिलते ही पूछा :

—तुम ने मुझे पहचाना ? युवती मुस्कुराई ।

—हां अथवा न कहने में कोई अन्तर नहीं है । मुझे अब सभी कुच्छ एक समान लग रहा है ।

—मछली सुनकर बहुत खुश हुआ । सोचने लगा आधुनिक बसती के आधुनिक काल में इसे अध्यात्म तथा भोग की प्राप्ति शायद हो गई है ।

— में एक मूढ़ सा मछली हूं। जहां चार आदमी देखता हूं रूक कर देखने लगता हूं। साथ ही अपना धन्धा आंखो में मछलियां जड़ने का है। कभी कभार ग्राहक भी मिल जाता है। एक बात पूछना चाहता हूं।

—उत्तर देने के लिए अनुमति लेनी पड़ेगी। युवती ने कहा।

—प्रश्न बसती के किसी भी नए नियम एवं विधान से ताल्लुक नहीं रखता। मछली ने कहा।

—तो पूछो। परन्तु मैंने अनुभव किया है तुम अक्सर वह प्रश्न पूछते हो जिन का उत्तर तुम्हें पहले से मालूम होता है। युवती ने हंसते हुए कहा।

—तुमने ठीक कहा। आजकल नजाने क्यों, एक प्रश्न के पांच सात उत्तर पाकर भी प्यास नहीं बुझती है। शंका अपने स्थान से हटती नहीं है। मन उतावला बना रहता है।

—तो यूं करो। अपना प्रश्न और पहले से मिले हुए उत्तर मुझे बताओ। यदि मैं कोई नया उत्तर जानती हूं, तो तुम्हें बता दूंगी। युवती ने कहा। मछली मन ही मन में बहुत भर गया। एक दम युवती को अपलक निहारता रहा। युवती मुस्कराती रही। मछली ने कहा—तुमने आंखों में जो मछलियां जड़वाईं थी, अब पुरानी हो गई हैं। नई मछलियां जड़वालो।

— मैं जानती हूं, तुम मूढ़ नहीं हो। भीत्तर से बहुत चतुर हो। सीधे प्रश्न और उत्तर बता दो।

मछली और भी फूल गया। निकृष्ट सी प्रणय मुद्रा बना कर बोला— दो चार लोगों से पूछा, प्यार क्या होता है ? कोई उत्तर नहीं दे सका। तुमसे यही प्रश्न पूछना है।

—कोई उत्तर नहीं मिला ? युवती ने उदास बन कर कहा।

—कोई उत्तर नहीं मिला। मछली और भी अधिक उदास हो गया।

—मैंने जीवन में पहली बार यह शब्द तुम्हारे मुंह से सुना है। युवती ने कहा।

—तो तुम्हें भी कुच्छ मालूम नहीं ? मछली ने पूछा।

—बिल्कुल नहीं। इस शब्द के अर्थ तक मालूम नहीं। न मैंने कभी प्रयोग किया है, और न ही किसी को प्रयोग करते हुए आज तक देखा-सुना है।

—मुझे एक बहुत बूढ़े व्यक्ति ने, जिसकी खाल भीतर धंस गई थी और जिसका पिंजर ऊपर उभर आया था उसने कुच्छ बताया था, मछली ने कहा परन्तु जो कुच्छ बताया वह अधूरा था।

—क्या बताया था ?

—उसने कहा था - "बहुत पहले, जब यह बसती बहुत पुरानी थी। तो आदमी औरत से प्यार किया करता था।

—क्या किससे किया करता था ? युवती ने कुच्छ ऊंचे स्वर में यूं पूछा, जैसे उसकी आंखों में तेजी से घूमती मछलियों में कांटा लग गया हो।

—आदमी औरत से। मछली ने कहा।

—क्या किया करता था ?

—प्यार किया करता था ?

—प्यार करके आदमी क्या करता था ? युवती ने पूछा। मछली

निरूत्तर हो गया। क्या जवाब दे कि आदमी औरत से प्यार करके क्या करता है।

—तुम्हारा प्रश्न सच ही दिल्चस्प है। मछली ने कहा—प्रश्न मेंसे एक और प्रश्न निकल आया है कि प्यार करके क्या करता था।

उधर चौराहा लोगों से लबालब भर गया। मछली और युवती काफी पीछे रह गए। जो आया, उन्हें पीछे धकेल कर आगे धन्सता चला गया।

जब तक चौराहे और सड़क पर मामूली अन्धेरा उतरने लगा तब तक चौराहा और उसमें समाने और जुदा होनें वाली चारों सड़कों पर दूर दूर तक सिर ही सिर नज़र आने लगे। मछली को बहुत विस्मय हो रहा था कि लोगों का इतना बड़ा रेवड़ और आवाज़ का निशान तक नहीं। एक खामोशी, एक सन्नाटा, एक चुप्पी, एक स्तबधता। बस। लोग। चुप्पी। कुच्छ अलग दिखते हुए चौकन्ने निज़ामी परिन्दे।

मछली युवती से बात करना चाह रहा था। परन्तु हर आदमी अपनी जुबान पर चुप्पी का ताला चढ़ाए हुए था। युवती भी चुपचाप खड़ी थी। और कभी कभार मछली की ओर हल्की सी मुस्कराहट फेंक देती थी। मछली को अनुभव हो रहा था कि युवती भी मुस्कराहट के ही माध्यम से बात कह रही है। परन्तु उसे सन्नाटे का कारण समझ में नहीं आ रहा था।

अब सभी नाखुनों वाले, मछलियों वाले, चांदी और धात के हाथ पांव वाले, कपड़े पहने नग्न दिखने वाले, और बिना वस्त्र के ढ़के दिखने वाले सभी काठ के बुत से लग रहे थे। अजनबी-पन गहरा हो

आया था। कभी-कभी किसी आदमी, औरत अथवा दम्यानी जात के आदमी के निःश्वास अथवा लम्बे श्वास की आवाज़ उभर आती थी। और किसी क्षण जब कोई अपने शरीर को तनाव देता था तो लगता था बड़े वृक्ष का एक पत्ता हिल कर खड़खड़ाया है। मछली अधिक से अधिकतर परेशान हुआ जाता था? वह अब उल्टे के बारे में सोचने लगा था। यदि उल्टा उसके साथ होता तो वह कानों में ही अथवा आंखों ही आंखों में उससे बात कर सकता था।

चौराहे के पूर्व में जहां दो सड़कों की एक तिकोन बनती थी और जहां वह सलीबनुमा दीवार थी जिस पर इश्तिहार लगाया जाता था, दीवार खाली थी और उसके आगे छोटा सा एक मंच सा था जो खाली था। हर आदमी गालिबन हर ओर देख कर उस छोटे से मंच को अवश्य देख लेता था।

कुच्छ देर बाद किसी एक सड़क की छाती पर कुच्छ हलचल सुनाई दी। शायद कोई आदमी आ रहा था जिसको राह देने के लिए भीड़ आगे से हट रही थी। परन्तु वह आदमी बहुत धीरे चल रहा था। और लगता था कि उसे चौराहे में पहुंचने में काफी समय लगेगा।

मछली की बेचैनी चरम सीमा को छू रही थी। जहां वह हर बात पर नुकता धरने का आदी था और होटों के भीतर भी जिसकी ज़ुबान नाचती रहती थी उसकी जान नाक की नोक पर एकत्रित होकर मन्डरा रही थी। उसने युवती को अपनी ओर देखते हुए देखा तो उसके कान के साथ मुंह लगा कर कहा—चलो। कुच्छ दूर चलते हैं।

—क्यों ? क्या हुआ ? यहां जो कुच्छ होने वाला है वह देखोगे नहीं ?

—यहां क्या होने वाला है ? मछली ने होटों ही में पूछा।

—यहां हमारी ही बात होने वाली है। युवती ने कहा ?

— हमारी ही बात ? कौन करेगा ?

—हमीं करेंगे। युवती ने कहा।

—मैं और तुम करेंगे ? मछली ने पूछा।

—यही समझ लो। और अब चुप रहो ?

मछली खिसियाना सा। होकर चुप हो गया।

जब एक अजीब से लिबास, नैननक्श आकृति और हाव भाव का आदमी उस छोटे से मंच तक पहुंच गया तो सब की नज़रे उसकी ओर लग गईं। दूर सड़कों पर खड़े लोगों को वह आदमी धुन्धला सा दिखाई दे रहा था। कई एक को तो कुच्छ भी दिखाई नहीं देता था। परन्तु वह खड़े थे। बहुत कम लोग ऐसे थे जो सोच रहे थे कि वह यहां क्यों खड़े हैं और जो कुच्छ वहां होने वाला है उसमें उनका क्या और कितना सम्बन्ध है ?

वह अजीब आकृतिका आदमी खड़ा था और कुच्छ कहने की तैयारी कर रहा था। लोग उसे निरन्तर देखरहे थे। कि एक बहुत लम्बा-चौड़ा व्यक्ति जो देखते ही राक्षस लगता था मंच पर चढ़ा और जोर से कहने लगा—

—हमारी बसती की पुरानी परम्परा है कि जब भी कहीं बसती के बारे में बात हो तो पहले बात करने वाले का स्वागत तालियां पीट कर किया जाए। परन्तु नए नियमों में साफ लिखा

गया है कि ताली पीटना बसती के लिए कुच्छ अच्छा काम नहीं । जहां भी कुच्छ बात हो वहां ताली न पीटी जाए। ताली आज भी नहीं पीटी जाएगी। और अगर आप सब लोग पुरानी परम्परा से विवश होकर स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रख सकते तो ताली पीटें, परन्तु ताली पीटने की आवाज़ नहीं आनी चाहिए। जब आप बिना आवाज़ के ताली पीट लेंगे तो यह महोदय अपनी बात और आपकी बात आपको सुनाएंगे। अब आप ताली पीटिए।

सब लोग वैसे ही खड़े रहे। उस व्यक्ति ने कहा—मेरे कहने का महत्व समझिए। 'मैं'—उसने मुंह खोलकर अपनी दो जीभें दिखाईं।

—मैं बसती में बसती के लिए काम करने वाले सभी निज़ामी परिन्दों का अध्यक्ष हूं।

लोगों ने फिर भी तालियां नहीं पीटीं। निज़ामी परिन्दे ने फिर आग्रह किया—यदि आप लोग तालियां पीटना चाहें तो पीट लें। जल्दी करें।

इस बार एक आदमी ने, जिसने पांव के स्थान पर हाथ लगा रखे थे और हाथों के स्थान पर पांव, एक कदम आगे बढ़ कर कहा—आधुनिक बसती के नए विधान में यह तो लिखा गया कि ताली पीटना पुरानी परम्परा है परन्तु यह क्यों नहीं बताया गया कि यदि ताली पीटना ही पड़े तो बिना आवाज़ के ताली कैसे पीटी जाए। तुम हमें बताओ कि बिना स्वर के ताली कैसे पीटी जा सकती है, हम पीट देते हैं।

– निज़ामी परिन्दों का अध्यक्ष तनिक हंसा—

—हर बात आधुनिक विधान ही में लिखी जाए यह सम्भव नहीं। कुच्छ बातें बसती वाले स्वयं भी कर सकते हैं। मुझे विश्वास है कि बहुत से लोग ऐसा कर भी रहे हैं। कह कर उसने महाशय को देखा उसने मुस्कराकर हां में सिर हिलाया—

—आप ऐसा करें कि ताली पीटने का अभिनय मात्र करें।

उसका कथन सुनकर आगे खड़े कुच्छ लोग सरगोशियां करने लगे और बिना आवाज़ के ताली पीटने का अभ्यास करने लगे। फिर दो चार आगे के व्यक्तियों ने एक स्वर में कहा :

—यह सम्भव है। एक दम ऐसा हो सकता है। निज़ामी परिन्दों का अध्यक्ष प्रसन्न दिखाई देने लगा। ऊंचे स्वर में उसने कहा :

—हो क्यों नहीं हो सकता ! बहुत कुच्छ हो सकता है। हर काम का, बात का अभिनय मात्र हो सकता है और आधुनिक कार्यक्रम चल सकता है। यहां, इस बसती में कुच्छ लोगों ने बहुत विचित्र और जटिल कार्यों का अभिनय मात्र किया है। कार्यक्रम के निर्माता उन लोगों को शीघ्र ही बसती के विशिष्ट वासी होने के प्रमाण पत्र प्रदान करने के बारे में विचार विमर्श कर रहे हैं।

आगे खड़े, जिन में अधिकतर लोग फैन्सी ड्रैस प्रति योगिता में भाग लेने में दक्ष थे उन्होंने बिना आवाज़ वाली तालियां बजाईं। ताली बजाने का अनुपम अभिनय किया फिर निज़ामी परिन्दों के अध्यक्ष ने कहा—अब यह महोदय आपकी बातें आपसे करेंगे।

विचित्र व्यक्तित्व के स्वामी महाशय एक कदम आगे आए और कुच्छ क्षणों तक अपनी दृष्टि दौड़ाने के पश्चात बोले :

— मैं बसती के हर जीव का अभिवादन करता हूं। बधाई देता हूं कि हर आदमी यहां मेरे मुंह से अपनी बातें सुनने के लिए उपस्थित हुआ है। मैं बसती में कार्यक्रम के निर्माता के रूप में कार्यरत हूं। मेरे पास बसती के हर आदमी का शिकायतनामा पहुंच चुका है। इस समय, समय कम है वरना सभी शिकायतनामे यहां पढ़े जाते। उन ही शिकायतनामों के आधार पर मैं आप सब लोगों से कुच्छ प्रार्थनाएं करने आया हूं। क्या मुझे प्रार्थना करने का अधिकार आप लोग देते हैं ?

उसने आज्ञा मांगी। परन्तु कोई भी बोला नहीं। उसने एक बार फिर विनय के स्वर में विनम्र होकर कहा — आप लोग मुझे स्वीकृति देते हैं कि मैं आपके शिकायत नामों के सम्बन्ध में कुच्छ बात करूं ? जब तक आप लोग हां नही कहेंगे, मैं अपनी जुबान नहीं खोलूंगा। कह कर वह हर व्यक्ति के चेहरे पर दृष्टि दौड़ाने लगा।

सब के चुप रहने पर उन महोदय ने कहना प्रारम्भ किया — चुप रहना ही स्वीकृति का परिचायक है। आपने चुप रह कर जो स्वीकृति दी है मैं उसका आभारी हूं। सभी शिकायतनामे जो आपने अपने द्वारों पर लगाए थे, पढ़ने के पश्चात बसती के सभी कार्यक्रम निर्माता इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि बसती में आधुनिक सुधार लागू करने के पश्चात भी लोगों को बहुत सी शिकायतें हैं, उन्हें दुख हैं, उनकी समस्याएं हैं। उन सब को दूर करने और समाधान उपलब्ध करवाने के लिए आप सब लोगों का सहयोग बहुत आवश्यक

है। आप को अधिक कुच्छ नहीं करना है। केवल अपनी शिकायतें और पीड़ाएं समाप्त करने के लिए एक छोटा सा कार्य करना है। आप करेंगे ?

कोई उत्तर न पाकर महोदय ने निज़ामी परिन्दों के अध्यक्ष से कहा—कृपया तुम लोगों को पूछो कि वह एक छोटा सा काम करेंगे ?

निज़ामी परिन्दों के अध्यक्ष ने ऊंचे स्वर में कहा—हां। सब लोग अवश्य करेंगे। बसती को आधुनिक बनाने में सब लोगों ने जैसे पहले सहयोग दिया है वैसे ही सदैव देंगे। जो कार्य आप करने को कह रहे हैं वह भी तो बसती की उन्नति प्रगति एवं सुन्दरता ही के लिए कह रहे हैं। आप कहें जो कुच्छ कहना है।

धन्यवाद कह कर महोदय ने लोगों से कहा—बहुत विचार-विमर्श के पश्चात् हमने आपकी समस्त समस्याओं का एक सुन्दर एवं टिकाऊ समाधान तलाश किया है। मुझे विश्वास है कि उसी को मान्यता देकर हम और आप सुखी हो सकते हैं और बसती को प्रगति की ओर ले जा सकते हैं। आप लोगों से अनुरोध है कि जब तक सबके दुख-पीड़ाएं यातनाएं समाप्त नहीं हो जातीं और बसती सम्पूर्ण रूपसे आधुनिक तथा सुन्दर नहीं हो जाती तब तक आप सब ज़ुबान बन्द रख कर बोलें, कान बन्द करके सुनें और आंखें बन्द रख कर देखें। आप देखेंगे कि आपके इतना मात्र करने से हम कार्यक्रम निर्माता आप लोगों के लिए क्या-क्या कर सकते हैं।

अब लोगों में कुच्छ हलचल हुई। पहले धीरे-धीरे तालियां बजीं। फिर तालियां ज़ोर पकड़ती गईं। फिर ऊंचे स्वर में तालियां पिटने लगे। फिर तालियां पिटने का एक विशेष क्रम शुरू हुआ।

जब एक की ताली का दूसरे की ताली से स्वर मिलने लगा तो सब को आनंद आने लगा । जन समूह तालियों में आनंद का अनुभव करने लगा।

तालियां बजाते हुए काफी समय हो गया । निरन्तर तालियां पिट रही थीं और निज़ामी परिन्दों का अध्यक्ष और कार्यक्रम निर्माता सदस्य तालियां समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहे थे । परन्तु तालियों का सिलसिला बढ़ता जा रहा था। और बढ़ते-बढ़ते यहां तक आ पहुंचा था कि समस्त जन-समूह की ताली का एक ही जुड़ा हुआ स्वर उभर रहा था ।

हाथों में झनझनाहठ होने लगी थी। अंगुलियों के पैरों में सूजन आने आने लगी थी। और तालियां बराबर पिट रही थीं।

उधर निजामी परिन्दों का अध्यक्ष ऊंचे स्वर में चिल्ला रहा था—अब आप लोग ताली बन्द कीजिए और इन महोदय की अगली बात सुनिये। वह बार-बार चिल्लाया । परन्तु तालियां बन्द न हुईं । उसने ऊंचे स्वर में कार्यक्रम निर्माता से कहा :

—अब क्या किया जाए। तालियां तो बन्द होती नहीं हैं।

—बजाने दो। तालियां बजना हमारी सफलता का प्रमाण है । बसती के लोगों में पुरानी परम्परा के कीटाणु पूरे अस्तित्व के साथ विद्यमान हैं। यह छूट नहीं सकते। और इन्हीं कारणों से यह बसती आधुनिक बन रही है और उन्नति कर रही है।

कार्यक्रम निर्माता कब चला गया। निज़ामी परिन्दों का अध्यक्ष कब तक चिल्लाता रहा और कब गायब हो गया किसी को ज्ञान

नहीं था। सब लोग सिर झुकाए, आंखें बन्द किए हुए ताली पीट रहे थे।

फिर लोग बिखरने लगे। जन-समूह घटने लगा। अपने-अपने घर को हर व्यक्ति लौटने लगा। परन्तु हर आदमी ताली बजा रहा था।

कुच्छ लोगों के हाथों से रक्त निकल आया था। वे घर पहुंच चुके थे और बराबर ताली पीट रहे थे। और आकांक्षा करने लगे थे कि स्वप्न में भी ताली पीटें और आनंद का अनुभव करें।

बसती के हर व्यक्ति का जब अपना-अपना दिन हुआ तो उसे अनुभव हुआ कि वह ताली के स्वप्न से जागा है। सोचने लगा कि गई रात क्या हुआ था।

सात

लोगों को जुबान बन्द रखकर बोलना था । आंखें बन्द करके देखना था और कान बन्द रख कर सुनना था ।

हर आदमी सुनने लगता तो उसे अपनी और बसती की आधुनिकता और प्रगति का ध्यान आ जाता । जब भी वह बोलने अथवा देखने लगता तो आधुनिकता नवीनता और अपनी समस्याओं के समाधान आंखों के आगे नाचने लगते ।

मछली और युवती जब उसके कमरे में पहुंचे तो वह एक बड़ा इश्तिहार लिखने में व्यस्त था । दोनों चुप-चाप एक कोने में बैठ गए । और उसे लिखता हुआ देखते रहे । वह सुन्दर अक्षर जोड़ने लिखने में निपुण लगता था । हर अक्षर को फूल-बेलों से सजा-संवार रहा था । मछली और युवती दोनों चकित हुए जा रहे थे । फिर मछली स्वयं पर काबू न रख सका और कहा :

—उल्टा । तुम बहुत सुन्दर लिखते हो । तुम्हारे हाथों में कलात्मक सौन्दर्य है । यह इतना सुन्दर और सम्मोहन कर देने वाला इश्तिहार कहां लगाओगे ?

— यहीं। बसती मे। उसी चौराहे में । सलीबनुमा दीवार पर। उसने झुके-झुके ही कहा।

—तुम्हारे हाथों में जादू है। लोग तुम्हारा निर्मित सौन्दर्य देखेंगे तो कि कर्तव्य विमूढ़ हो जाएंगे। मछली ने कहा।

—और हो सकता है तुम्हें खोजते हुए यहां आ पहुंचे। युवती ने कहा।

वह आत्मग्लानि से भर गया। उसे स्वयं पर क्रोध आने लगा। स्वयं को वह धिक्कारने लगा। इश्तिहार पर क्या लिखा था, उस सम्बन्ध में मछली ने कुच्छ चर्चा की, न ही युवती ने। वह कहने को था कि आंखें खोल करके देखो मैं ने लिखा क्या है परन्तु पूछते हुए भी उसे संकोच हो रहा था। फिर उस संकोच ने क्षोभ का रूप ले लिया उसने गंभीर स्वर में मछली से पूछा :

—मछली ! आदमी आंखे बन्द करके देख सकता है ?

मछली प्रश्न सुनकर झनझना गया। सोचने लगा वह और युवती इसी प्रयोजन से तो उसके पास आए थे कि कुच्छ पूछें। मछली ने कहा :

—इश्तिहार का सौन्दर्य देख कर मैं भुलक्कड़ हो गया। में यही पूछने आया था कि आदमी........। उसने मछली की बात काट डालीं।

—बसती के सभी लोग अब यही तो करेंगे। मैं या तुम बसती से बाहिर कहां हैं ?

बसती के दूसरे दिन सलीब नुमा दीवार पर इश्तिहार लगा था जिस पर लिखा था :

— आंखें बन्द करके देखो, ज़ुबान बन्द करके बोलो और कान बन्द कर के सुनो । बसती की प्रगति के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं । इसके साथ-साथ पानी के बिना ही प्यास बुझाओ । रोटी के बिना ही भूक मिटाओ और हवा के बिना ही सांस लो, और आधुनिकता के लिए बिना वस्त्र ही शरीर को ढ़को ।

सब से पहले वह इश्तिहार निज़ामी परिन्दों के अध्यक्ष ने देखा । पहले तो वह इश्तिहार की सुन्दरता देख कर चकित होता रहा फिर जब दो-चार निज़ामी परिन्दे और कुच्छ लोग भी चौराहें में एकत्रित हो गए तो निज़ामी परिन्दों के अध्यक्ष ने इश्तिहार के विषय की ओर ध्यान दिया । उसे अनुभव हुआ कि वह इश्तिहार कार्य-क्रम निर्माताओं की ओर से नहीं लगा है बल्कि बसतीं ही के किसी आदमी ने यह इश्तिहार लगाया है । एक शंका उसके दिमाग़ में सिर उठाने लगी कि जो कुच्छ कार्य-क्रम निर्माता सदस्य ने उससे पहले दिन कहा था तालियों के पिटने के कारण वह स्पष्ट रूप से उजागर करने के लिए आगे कुच्छ नहीं कह सका । सम्भव है इस नए इश्तिहार का प्रभाव बसती वाले प्रतिकूल रूप से लें । उसने निज़ामी परिन्दे को एकत्र करने का निर्णय लिया ।

इश्तिहार को पढ़ने के लिए अब भारी संख्या मे भीड़ एकत्रित हो चुकी थी । और इश्तिहार की सुन्दरता की सराहना बार-बार हो रही थी । दूसरी ओर कुच्छ आदमी ऐसे भी थे जो विषय के बारे में चर्चा कर रहे थे । परन्तु चर्चा करते समय उन्हें कठिनाई आ रहीं थी कि इश्तिहार का विषय औरों को अधिक खोल कर कैसे समझाएं ।

बनते-बनते भीड़ का मत यह बन गया कि यह सभी कुच्छ करना

किसी की भी सामर्थ्य में नहीं। यह सभी कुच्छ असम्भव है। धीरे-धीरे यह बात हवा की भान्ति लोगों में फैलने लगी कि इश्तिहार का विषय हास्यास्पद है और इसे यहां लगा कर बसती के लोगों से मज़ाक किया गया है। सामूहिक रूप में इश्तिहार का वहिष्कार कर के इसे फाड़ डालना चाहिए।

मछली भी वहीं था। वह भी सुन रहा था। और अधिक सुनने के लिए वह जल्दी-जल्दी अपना स्थान बदल कर हर आदमी के होटों की ओर देख रहा था।

-- मछली। कुच्छ परेशान दिखाई देते हो। मछली घूमा तो वह मुस्करा कर कह रहा था।

—तुम भी यहीं हो। मैं तुम्हें मिलना चाहता था।

—मछली ने जल्दी-जल्दी पलकें झपकते हुए एकायक एक ही सांस में कहा।

—मुझे क्यों मिलना चाहते थे ?

प्रश्न सुनकर मछली उसके साथ सट कर खड़ा हो गया और बहुत धीमे स्वर में कहने लगा—यहां कुच्छ लोग तुम्हारे इश्तिहार के विषय से सहमत नहीं हैं। वह इसे फाड़ डालने की सोच रहे हैं।

वह हंसा। चुप रहा। ग्रौर मछली की ओर देखता रहा। मछली ने कहा :

—तुम बात क्यों नहीं करते। यदि यह लोग तुम्हारा इश्तिहार फाड़ डालेंगे तो क्या होगा ?

—यह लोग इश्तिहार नहीं फाड़ेंगे। यह लोग फाड़ने के बारे में केवल सोचेंगे। अधिक से अधिक इश्तिहार को फाड़ने का अभिनय करके सन्तुष्ट हो जाएंगे।

मछली उसके मुंह को देखने लगा । वह क्या कह रहा था, मछली के दिमाग से वाहिर का था । उधर इश्तिहार को फाड़ डालने की बातें अधिक ऊंचे स्वरों में होने लगी थीं । मछलीं को चिन्ता होने लगी थी । इश्तिहार को फाड़ डालने का वहुमत संख्या में बढ़ रहा था ।

मछली तेज़ी से एक ओर भागा । उसने मछली का बाज़ू पकड़ कर कहा — कहां भाग रहे हो ।

—वही युवती ! एक झलक देखी है । मैं उसे ढून्ड कर लाता हूं । अभी आया ।

—मछली । तुम कोई वात छाती के अन्दर नहीं रख सकते । जब तक उगल न दो, तुम्हारा दम घुंटता रहता है । किसी से यह न कह देना कि यह इश्तिहार उल्टे ने लिख कर लगाया है ।

—तुम ने रोक दिया । वहुत अच्छा किया । अभी तक मैं नहीं जानता किस शक्ति ने रोक रखा था ।' कह कर वह भागने लगा— अभी आया ।

— युवती को बुला कर क्या करोगे ? उसने पूछा ।

—तुमसे अब क्या चोरी है । चलते-फिरते सोते-जागते युवती मेरी आंखों की मछलियों में तैरती रहती है । मुझे अनुभव होने लगा है कि मैं युवती के बिना मृत-समान हूं । मछली ने उदासीन होकर परन्तु शीघ्रता से कहा ।

— युवती को पाकर जीवित हो जाओगे ? उसने हंसते हुए पूछा ।

—हां । जीवित हो जाऊंगा । कह कर मछली भाग गया ।

कुच्छ देर के बाद एक आदमी ऊंचे स्वर में चिल्लाया—बसती के लोगो। इस सलीबनुमा दीवार और इस चौराहे का हमारे साथ, हमारे नियमों असूलों विधानों और बसती की आधुनिकना का गहरा सम्बन्ध है। यहां जो भी इश्तिहार लगता है उसे हर आदमी हर प्रकार से मान्यता देता है। आज यह इश्तिहार, जो बहुत सुन्दरता से लिखा गया है हम सब देख कर दुविधा में फंस गए हैं। इसे हम मान्यता देदें, अथवा अस्वीकार करदें। हमें अब सामूहिक तौर पर निर्णय करना होगा कि इस इश्तिहार पर जो कुच्छ लिखा है वह सब कुच्छ बसती की सुन्दरता और आधुनिकता के लिए कहां तक सहकारी हो सकता है ?

चौराहे में खड़े लागे उस आदमी को गोलाकार में घेर कर खड़े हो गए। कुच्छ चलते हुए लोग भी वहां रूक गए। उसी आदमी ने फिर कहा—हम चाहे कुच्छ समय ले लें, परन्तु हमें इसके सम्बन्ध में अवश्य सोचना है ?

—क्या सोचना है ? एक व्यक्ति आगे बढ़ आया—सीधी सी बात है कि आंखें बन्द करके देखा नहीं जा सकता न ही कान बन्द रख कर सुना और जुबान बन्द रख कर बोला जा सकता है। फिर यह दो बातें तो बहुत ही असम्भव हैं कि रोटी के बिना ही भूक मिटानी होगी और हवा के बिना सांस लेना होगा। उस बोलते हुए व्यक्ति को एक महिला ने एक ओर हटाया और हाथ उठा कर कहा—क्या असम्भव है ? कुच्छ भी अस्वीर कर देना और स्वीकार कर लेना बसती के लिए हितकर नहीं हैं। हमें यदि इन सब बातों की विधि सिखाई जाएगी तो बसती की प्रगति के लिए हम यह भी कर लेंगे।

—हमें विधि बताएगा कौन ? एक दम्यांनी ज़ात के जीव ने बीच में कहा।

—जिस ने इश्तिहार लगाया है । पहले व्यक्ति ने कहा।

—इश्तिहार लगाने वाला कौन है ? दो-चार स्वर एक साथ उभरे ।

—सबसे पहले इस बात की खोज आवश्यक है कि यह इश्तिहार लिखने वाला कौन है। दो चार स्वरों ने एक स्वर होकर समर्थन किया।

बात चल पड़ी इश्तिहार लगाने वाला कौन है ? प्रायः आदमी स्वयं से अथवा एक दूसरे से कहने लगे—लिखने—लगाने वाला कौन है ?

मछली युवती और वह तीनों एक साथ खड़े थे । मछली बार-बार बहुत भरी दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था। मछली को यूं देखते हुए देख कर उसे संशय होने लगा था कि मछली फट न पड़े । परन्तु ऐसा नहीं हुआ। लोग बिखरने लगे । और इश्तिहार का विषय अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार साथ लेते गए ।

वह तीनों खड़े रह गए । मछली ने कहा ।

—चलो ! चलें ! लोग तो चले गए।

—हां। चले गए। इश्तिहार को हाथ लगाए बिना ही । उसने कहा ?

—मैं सोच रही थी लोग परेशान हो जाएंगे। और एक दम यहीं इश्तिहार के सामने, चौराहे ही में निर्णय दे देंगे कि यह नहीं हो सकता। परन्तु——!

—परन्तु क्या ? एक अजनबी स्वर ने युवती, मछली और उसे, तीनों को चौंका दिया।

—क्या नहीं हो सकता ? उस अन्जाने व्यक्ति ने फिर पूछा। युवती कुच्छ डर गई। जल्दी-जल्दी बोली—यही कि यह बातें न हो सकें, ऐसा नहीं हैं। यह बातें असम्भव नहीं हैं।

—तो यह बातें सम्भव हैं ? फिर प्रश्न हुआ।

—हां हैं। बिल्कुल हैं। मछली एकदम बोल पड़ा—मैं ने कई बार ऐसा किया है। मैं मुंह बन्द करके बोला हूं। आंखें बन्द करके मैंने सब कुच्छ देखा है और पानी के बिना ही अपनी प्यास भी बुझाई है।

अजनबी ने स्निग्ध दृष्टि से मछली को देखा फिर पूछा—क्या नाम है तुम्हारा ?

—जी मछली। पहले मछली था। अब मछली दास से मशहूर हो गया हूं।

—करते क्या हो ? अजनबी ने प्रश्न किया।

—काम करता हूं। लोगों की आंखों में मछलियां जड़ता हूं।

—ग्राहक मिल जाते हैं ?

—हां। मिल जाते हैं। बहुत ग्राहक हैं। अब तो यह हालत है कि ग्राहकों से भागता फिरता हूं।

—वह क्यों ? अजनबी ने जान-बूझ कर अजनबी बनते हुए कहा।

—इसलिए कि मांग पूरी नहीं कर सकता। मछलियां कम हैं। तेजी से भागने वाली तो बहुत ही कम।

वह अजनबी जब दूर चला गया तो युवती ने मछली से कहा—मुझे इस आदमी को देखर बहुत डर लगा।

—मैं भी बहुत डर गया। पता नहीं क्यों? आजकल जो कुच्छ तुम अनुभव करती हो, वही कुच्छ मुझे भी अनुभव होता है।

—मछली। अब चलें। उसने कहा।

—हां। शीघ्र ही चलना चाहिए। वरना फिर कोई आ धमकेगा और कुच्छ पूछने लगेगा।

———

आठ

बसती जब सोकर जागी तो उसमें एक परिवर्तन आ चुका था। बसती भर में, हर ईंट पर, हर द्वार, पर हर मोड़ पर, हर दुकान पर, चौराहे और सड़क पर इश्तिहार लग चुके थे। और सभी पढ़ रहे थे। इश्तिहारों पर लिखा था—

—हमें बताया जाए कि आदमी आंख बन्द करके कैसे देख सकता है। बिना जुबान खोले कैसे बोल सकता है। और कानों को बन्द करके कैसे सुना जा सकता है।

सड़क पर, गली में, चौराहों पर लोगों की टुकड़ियां खड़ी थी। इश्तिहारों की चर्चा ज़ोरों पर थी। परन्तु लोगों में एक शका अभी भी एक दृढ़ सशय का रूप लेकर घूम रही थी कि पहला इश्तिहार किसने लगाया था और उन्हें समझाने और विधि बताने कौन आएगा। इस सम्बन्ध में बहुत से लोगों का ज़िक्र हो रहा था। कोई कह रहा था—यह सारा काम निज़ामी परिन्दों का है। कोई कह रहा था—कार्यं क्रम निर्माताओं ही ने वह इश्तिहार लगवाया था। अब वही

विधि बताने आएंगे। कहीं-कहीं यह भी कहा जा रहा था कि जो लोग बसती को प्रगति की ओर लिए जा रहे हैं और आधुनिकता ला रहे हैं यह सब उन्होंने किया है। कुच्छ लोग एसे भी थे जो यह कह रहे थे—यह हम तुम और बसती वाले ही हैं। हमीं, जो कुच्छ यहां होता है, करने वाले हैं।

एक विशेष हलचल बसती में हो चली थी।

फिर डौन्डी पिटी। अब की बार डौन्डी पीटने का काम युवतियों के सपुर्द किया गया था। बसती में से चुनी हुई युवतियां एक लम्बें मंच पर जिसे ऊंट खेंच रहे थे बहुत सुन्दर आकर्षक वस्त्र तथा आभूषण धारण कर मोहक मुद्रा में और मृदु वाणी में स्थान-स्थान पर रूक कर कह रही थीं :

—यह बसती आपकी है। यहां सब कुच्छ आप का है और आपके द्वारा निर्मित किया गया है। यहां जो कुच्छ बनता है, बनने में चाहे नियम हो, इमारत हो, भवन हो, सड़क गली और मच हो, शीशे और दुकाने हो, सभी का निर्माण आप ही करते हैं। बसती वालों ने मिल कर एक नाटक-गृह निर्माण किया है। वहीं पर एकत्रित होकर, बसती वाले उसका उद्‌घाटन करेंगे और वहां बसती के उच्चतम सेवकों को इनाम बांटे जाएंगे और वही पर बसती वाले अपने इश्तिहार के प्रश्नों का उत्तर भी देंगे।

सभी लोग यह डौंडी सुनते जा रहे थे। और प्रसन्न होते जा रहे थे। उनके मध्य कुच्छ लोग उन बसती की चुनी हुई सुन्दरियों-नव-यौवनाओं के हाव भाव, अभिनय आकृतियां और वाणी सुन-सुन कर मन्त्र-मुग्ध हो रहे थे।

नौ

—चलो उठो। चलें।

—कहां ? कहां चलें ? उसने पूछा।

—तुमने मुझसे कहा था कि तुम नाटक-गृह देखने मेरे साथ चलोगे। मछली से उसी का कथन हुआ था।

—हां। कहा था। परन्तु तुम जाओ। मैं नहीं चल सकूंगा।

—क्यों नहीं चल सकोगे ? मछली ने क्षुब्ध स्वर में पूछा।

—नाटक-गृह क्या है मैं भली भान्ति जानता हूं। सहज भाव में उसने कहा। मछली तम-तमा गया। युवती मछली को अपलक देखने लगी—तुम्हें मालूम है। तुम झूट बोल रहे हो। नाटकगृह के भीतर क्या हैं, तुम इस बारे में रत्ती भर भी नहीं जानते। तुम सदैव बातें करते हो। काल्पनिक और हवाई, बिना धरातल और बिना सिर-पैर की बातें। मेरी तुम्हारे बारे में धारणा शत-प्रतिशत सही है। तुम उल्टे आदमी हो। और जो कुच्छ बसती में होता है, तुम सदैव उससे उल्ट सोच ले हो।

वह सुनकर मुस्कराता रहा। और मछली को स्निग्ध और स्नेह की दृष्टि से देखता रहा। उसके शान्त स्वभाव से लगता था कि वह मछली के साथ जाएगा कहीं। अन्त में मछली उसे कुच्छ खरी-खरी सुना कर जाने लगा तो उसने हंसते हुए कहा—मछली तुमने यह तो पूछा नहीं कि नाटक-गृह के भीतर है क्या-क्या?

—आदमी जहां पहुंच न सके वहां के बारे में पूछता है। मैं वहां पहुंच सकता हूं। जा सकता हूं। अपनी आंखों से देख सकता हूं।

उसे निश्चय हो गया मछली रूकेगा नहीं उसने भागते हुए मछली को रोक कर कहा :

—आवश्य जाओ : देख कर आओ। एक काम करो। अपना दिमाग़ मेरे पास छोड़ते जाओ।

—क्या बेतुकी बात है। मछली ने कहा।

—आकर ले लेना। वहां, नाटक गृह में हो सकता है तुम्हारा दिमाग़ चोरी हो जाए।

—तुम पागल हुए जा रहे हो। अनाप-शनाप कहने लगे हो। कह कर मछली युवती को लेकर नाटक-गृह देखने भाग गया।

रास्ते में चलते हुए उसे उल्टे की बात याद आई। उसने युवती से कहा—उल्टा भी सचमुच उल्टा है। कह रहा था दिमाग़ चोरी हो जाएगा। भला खोपड़ी में से कभी दिमाग़ भी चोरी हो सकता है?

—यह तुम और उल्टा जानो। मुझे तो अनुभव होता है कि मेरा दिमाग़ तो है हीं नहीं। ख़ाली खोपड़ी है।

—तुम बहुत चालाक हो। मछली ने कहा।

—कैसे ? युवती ने हंस कर पूछा।

—भला कहीं बिना दिमाग़ के भी खोपड़ी होतीं है ? फिर तुम इतनी सुन्दर हो कि कोई भी यह विश्वास नहीं कर सकता कि तुम्हारी

खोपड़ी में दिमाग़ नहीं। मेरा विश्वास है कि हर सुन्दर चीज़ की खोपड़ी में दिमाग़ होता है।

युवती कुच्छ अधिक प्रफुल्लित दिखाई देने लगी।

———

दस

— तुम ने मुझे पहचाना नहीं। मछली ने कहा। राक्षस ने 'हां' अथवा 'न' उत्तर ही न दिया।

— मैं और यह पहले एक बार आए थे। उस समय तुमने कहा था भीतर चलना चाहो तो चल सकते हो।

— कहा था। परन्तु उस समय नाटक-गृह बन रहा था। अब बन चुका है। नई बसती के नए विधान की आधुनिक धारा के अनुसार बन रही चीज़ को हर कोई देख सकता है। परन्तु जब बन कर तैयार हो जाए तो उसे स्वयं बनाने वाला भीं नहीं देख सकता। राक्षस ने बहुत बिनम्र स्वर में कहा। मछली युवती को छोड़ उस राक्षस के और निकट चला गया और कहा—

—राक्षस महोदय। भीतर जाने को कोई तरीका नहीं ? मैं तो बहुत आशा लेकर आया था। फिर मैं इस युवती को कैसे मुंह और आंखें और अपने हाथ दिखा सकूंगा जिसे मैं बड़े गर्व से अपने साथ लाया था।

— तुम शायद मछलियां आंखों में मढ़ने का धन्धा करते हो।

राक्षस ने स्मरण करते हुए कहा तो मछली उछल पड़ा—मैंने कहा था ना, तुम्हें मेरी याद है ।

—हां है तो । परन्तु भीतर जाने के लिए एक साधारण सी शर्त रखी गई है । राक्षस ने कहा ।

—शर्त ? शर्त तो होनी ही चाहिए । वरना हर कोई आएगा और अन्दर आ घुसेगा । भला क्या शर्त है ? मैं शर्त अवश्य पूरी करूंगा ।

—तुम्हें अपने सारे वस्त्र उतार कर भीतर जाना पड़ेगा । फिर जो वस्त्र भीतर वाले कहेंगे, वही पहनना पड़ेंगे ।

—ओं । हां हां क्यों नहीं । यह कौन सी बड़ी शर्त है । मछली ने कहा और युवती को संकेत से पास बुला कर कहा—क्यों ? ठीक है ना ?

—क्या ठीक है ? युवती ने पूछा । मछली का दिमाग बैठने लगा । झट से कहा – रासक्ष भैय्या कह रहे हैं भीतर जाने के लिए सारे वस्त्र उतारने होंगे ।

—केवल बस्त्र ही नहीं उतारते हैं, बल्कि नंगे रह कर वस्त्र-धारी का अभिनय करना है ? राक्षस ने कहा । युवती ने कुच्छ चहक कर बात आगे बढ़ाई ।

—राक्षस महोदय । ऐसा नहीं हो सकता कि हम वस्त्र पहने रहें और नग्न होने का अभिनय करते हुए भीतर जाकर घूमें ।

—अभी तक ऐसा कोई कार्य-क्रम नहीं बना है । जब बनेगा तो इश्तिहार अथवा डौंडी द्वारा सारी बसती को बता दिया जाएगा ।

मछली युवती की ओर देखता रहा । युवती कुच्छ क्षणों तक

विचार मग्न दिखाई देती रही। फिर उसने मछली से कहा—यदि भीतर जाने के लोभी हो तो वस्त्र उतारो।

—दोनों एक साथ उतारते हैं। मछली ने अनमने होकर कहा फिर राक्षस भैय्या से पूछा--राक्षस भैय्या यह वस्त्र उतार कर भीतर जाने का नियम क्या सोच कर और क्यों बनाया गया है, तनिक यह भी बता दो ? राक्षस ने मुस्कराकर कहा—कार्य-क्रम निर्माताओं का विचार है कि हर आदमी के असली वस्त्र उसका शरीर ही है। जो सब लोग पहनते हैं वह नकली और घटिया वस्त्र हैं। भीतर जाने के लिए असली पहनावा ही शर्त है।

मछली और युवती दोनों वस्त्र उतारने लगे। वस्त्र उतारते हुए मछली को उल्टे भी बात याद आई तो उसने अपनी खोपड़ी को ठोंक-बजा कर देखा। दिमाग उसकी खोपड़ी ही में था।

युवती ने वस्त्र उतारे तो मछली एक दम मोहित हो उठा। वह युवती के समीम होने को था कि युवती ने कहा—मैंने तुम्हें पहली ही पहचान में कहा था कि मुझे हाथ लगाने का प्रयत्न मत करना। मेरा अस्तित्व कागज़ी है। हाथ लगाओगे तो फट जाएगा। क्या तुम चाहोगे कि मेरी देह फट जाए और मैं माकारा हो जाऊं ? सदा के लिए ?

मछली का दिमाग आत्म—ग्लानि और पश्चाताप के भाव से से छलक आया। वह युवती के समीप से हट गया और राक्षस से पूछा—अब हम भीतर जा सकते हैं ?

—हां। जा सकते हो। घूम फिर सकते हो।

रत्न जड़ित द्वार खुलते ही मछलीं और युवती ने प्रवेश किया। और चम-चमाती झूलती हीरों की लड़ियों से निर्मित चिलमन ने

उनका स्वागत किया। मछली ने चिलमन की एक लड़ी को थाम लिया और युवती से कहा यह हीरे से भी अधिक चमक रही है। यह सभी हीरे ही तो होंगे।

युवती ने भी लड़ी एक क्षण तक थामे रखी फिर उसे झूलने के लिए छोड़ दिया—मुझे अपनी नज़र में कुच्छ विकार सा अनुभव होता है। सदैव ही नकल को असल समझ बैठती हूं और असल को नकल। यदि यह सभी झालरें हीरों की हैं तो इतने हीरे आए कहां से ? और फिर झालर ही में क्यों लगा दिए गए। इनको मुकुटों में क्यों नहीं जड़ा गया।

युवती की बात सुन कर मछली उसकी समझ पर हंसा मुकुट में वह वस्तु जड़ी जाती है जो मुश्किल से उपलब्ध हो। जो वस्तु ढ़ेर की ढ़ेर मिल जाए उसकी चिलमन तो क्या सीढ़ियां बनना प्रारम्भ हो जाती है।

दोनों कुच्छ ही कदम आगे बढ़े होंगे। उन्हें महसूस हो रहा था कि वह नर्म-नर्म घास पर चल रहे हैं। घास की उन्हें सुगन्ध भी आ रही थी। परन्तु दोनों देख रहे थे कि नाटक-गृह की नींव, दीवारें फर्श और छत आदि तो पत्थर के हैं, फिर फर्श पर घास कैसे उग आया है। मछली घास का तिनका तोड़ने के लिए झुकने ही वाला था कि दो स्त्रियों में से एक ने, जो वस्त्र पहने हुए नग्न होने का अभिनय कर रही थी मछली को रोक दिया। उसने कहा—आप संशय मत रखें। यह घास ही है और उगाया गया है। उगाने के लिए विधि बसती के बुद्धि-जीवियों ने तैयार की है। यह लीजिए एक तिनका। और इसे तोड़-मरोड़ कर देखिए कि घास असली है या नकली।

मछली ने घास के तिनके पकड़ लिए और हथेलियों पर मसल कर देखने सूधने लगा। युवती ने हंस कर कहा—तुम नाटकगृह देखने आए हो। घास खाने केलिए नहीं। इस में उलझो नहीं। आगे चलो। कह कर युवत्ती आगे बढ़ गई और मछली पीछे। साथ-साथ दो महिलाएं भी ! युवत्ती ने महिलाओं को टोका—हम लोग स्वतन्त्रता से स्वेच्छा ले घूमना चाहते हैं। मुझे लग रहा हे तुम दोनों हमारे साथ किसी पूर्वाग्रह से प्रतिबन्ध के तौर पर चिपकी हुई हो। दोनों महिलाओं ने झुक कर दोनों का अभिवादन किया और चली गईं। अब वे दोनों देखने में निर्वाध थे।

नाटक गृह के भीतर गोलाकार से भवन थे। हर भवन के द्वार पर पट्टिका लगी थी। और एक साथ बहुत सारे अलग शब्दों में शायद एक ही बात लिखी हुई थी ! मछली बहुत देर तक एक द्वार पर लगी पट्टिका की ओर देखता रहा। फिर घूम कर युवती की ओर देखा। युवती बराबर गर्दन उठाए ऊपर की ओर देख रही थी। मछली भी ऊपर देखने लगी !

—यह आकाश है या आकाश का चित्र ? कितना आर्कषक, सुन्दर और सार्थक है। कभी लगता हे असली है ? कभी लगता है असली की असल नकल है।

—हमें पूछ लेना चाहिए। मछली ने कहा—

—यदि यह असली है तो बसती का आकाश इतना सुन्दर क्यों नहीं है। यदि नकली है तो हम जाती वार इसी प्रकार के आकाश का टुकड़ा साथ लेते जाएंगे और अपने रहने—टिकने के स्थान में तान लेगे !

सछली ने इधर-उधर देखा ! एक भवन की खिड़की में से उसे एक बृद् बाहिर झांकता हुश्रा दिखाई दिया । मछली उसके समीप गया और पूछा — महोदय । नाटक गृह के भीतर तना हुआ आकाश असली है या नकली ?

वृद्ध बाहिर आ गया और काफी गम्भीर स्वर में बोला—यह आकाश ग्रसली है। अपना निर्मित किया हुआ असली आकाश । जिस आकाश की तुम बात कर रहे हो वह तो बहुत पुराना, जीर्ण और समय और वातावरण से पिछड़ा हुआ है !

मछली को उस वृद्ध का स्वर सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ । उसका स्वर किसी युवक जैसा स्निग्ध लग रहा था । मछली को विषयान्तर करना पड़ा। चकित स्वर में उस ने पूछा —वृद्ध महोदय ! देखमें में तुम बहुत बूढ़े लग रहे हो परन्तु तुम्हारा स्वर बहुत जवान है !

वृद्ध तरल हंसी हंसा—मैं युवक हूं ! मैं ने बृद्ध का मुखौटा पहना हुआ है । नई वसती के नए विधान के अनुसार वृद्ध-युवा ही नए अविष्कार करने में समर्थ हैं। यह निर्मित आकाश हमारा ही आविष्कार है। शीघ्र ही यह आकाश बसती के लोगों को उपलब्ध करवाया जाएगा ?

— बृद्ध-युवा महोदय ! पुराने और असली आकाश में क्या विकार और त्रुटियां देखीं कि नए को बनाने की अवश्यकतता पड़ी ? मछली ने पूछा !

— बहुत त्रुटियां थीं । विकार ही विकार थे । पुराना और असली आकाश मन-मानीं करता था । अपने ही

दिन-रात बनाया करता था और स्वेच्छा से बादल समेट कर वर्षा किया करता था यह आकाश अपने स्वामी का ही दास होगा ।

— युवा वृद्ध महोदय । हमें जाती बार उसी आकाश का एक टुकड़ा चाहिये । मछली ने कहा ।

—हां । मिल जाएगा । परन्तु जब तक औरों को न मिल जाए, तुम इस का प्रयोग नहीं कर सकोगे ।

युवती और मछली आगे बढ़े । वह पट्टिकायें देखते जाते और उस प्रभाग के आयोजक, संयोजक, वैज्ञानिक, आविष्कारक और उसके अधिकारी से वार्तालाप करते जाते । नाटक गृह के बारे में मछली को उल्टे की बात बार बार स्मरण हो आती कि वह नाटक गृह के हर भाग को जानता है । एक ही बात मछली को विशेष लगी कि सभी लोगों ने अपने कार्य, अपनी आयु और व्यवसाय के लिये आकर्षक और विचित्र मुखौटे पहन रखे थे । कुछ लोगों के विभागों के नाम और मुखौटे मछली ने स्मरण कर लिये । और वह चाहने लगा कि उल्टे से जा कर उनका वर्णन करे ।

नाटक गृह से बाहिर निकलते ही, सामने उल्टा को पाकर मछली कूद पड़ा । युवती भी काफी सन्तुष्ट दिखाई देने लगी । मछली ने एक दम कहा --मुझे तुम से कुछ आवश्यक और महत्वपूर्ण बातें कहनी हैं । उल्टा बहुत दिनों बाद खुल कर हंसा — मछली और महत्वपूर्ण बातें ? खैर मैं जानता हूं तुम्हारा महत्वपूर्ण और आवश्यक क्या है ।

—मेरा क्या महत्वपूर्ण है ? मछली ने विस्मय से पूछा ।

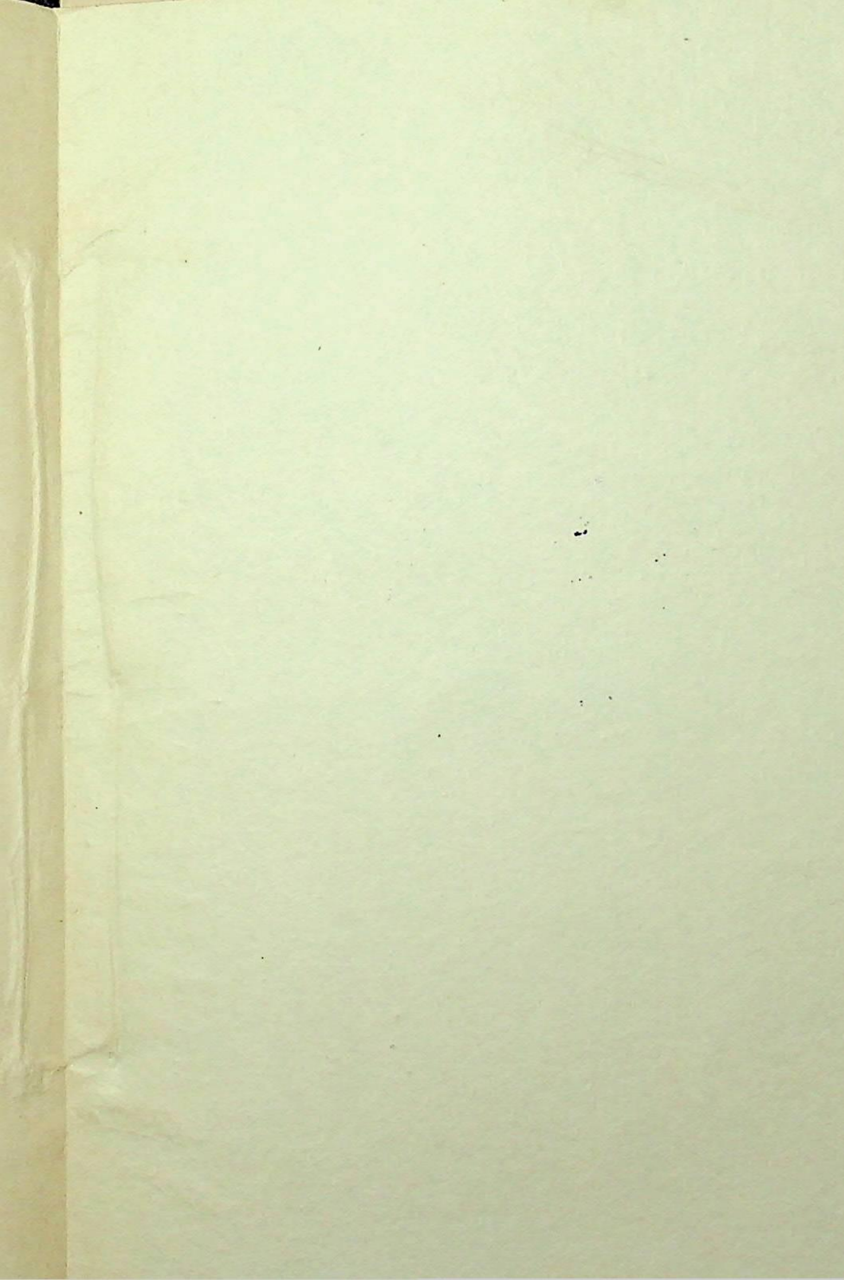
—नाटक गृह में जो सड़कें निर्मित हुई हैं वह बसती को कहां पहुंचायें गी । तुम यही पूछना चाहते हो ना । अर्थ के लिये मखौटे । संस्कृति के लिये मखौटे । भूगोल और इतिहास के लिये मखौटे ।

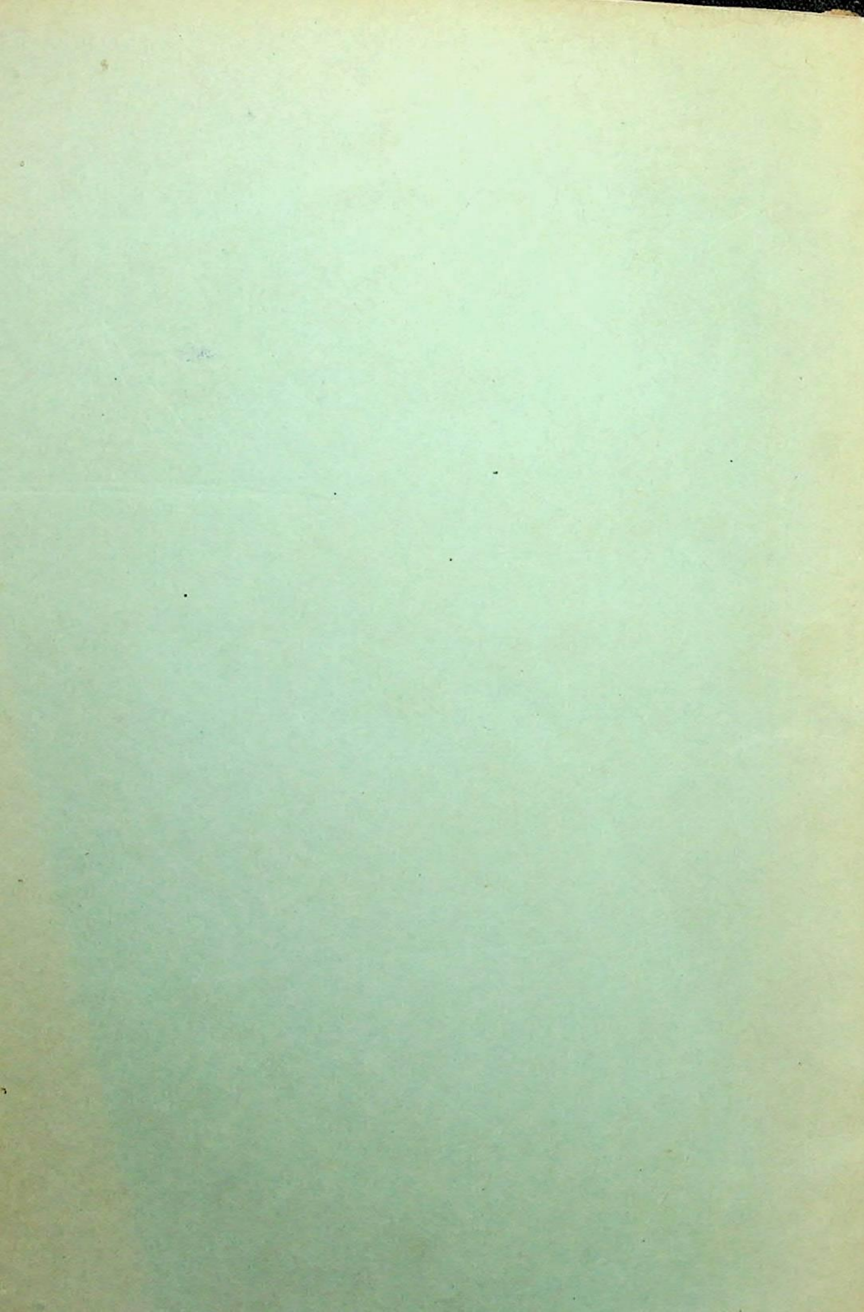
नैतिकता और आचरण और चरित्र के लिये मुखौटे । यहां तक कि स्त्री और पुरुष होने के लिये भी मखौटे । भाई मछली, नई बसती का नया विधान और विकास और प्रगति भी मुखौटा धारी ही हैं । यह सभी कुछ जो कुछ बसती के लिये नया निर्मित किया गया है, मात्र कथन का भन्डार है । इसी लिये मैं जानता था कि कथन की संस्कृति बिनाश के मार्गों की ओर ही जाती हैं ।

—परन्तु उल्टा—बसती वाले तो सभी कुछ को मान्यता देते जा रहे मछली ने कहा ।

—मछली ! मैं इस बसती से दूर जा रहा हूं । —कहां । यह मुझे ज्ञात है । कह कर उल्टा चल दिया । एक वीराने की ओर । उससे कुछ पीछे मछली चल रहा था । और दूर पीछे युवती भी उन्हीं के पीछे चल रही थी ।









सम्पादक : अरविन्द गुप्त